हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

- कांग्रेस मुख्यालय पहुंचे राहुल गांधी ने कार्यकर्ता को लगाया गले
- नोटा ने बनाया रिकॉर्ड, इंदौर में 2,06,224 ने किया नोटा का प्रयोग

- छत्तीसगढ़ में भाजपा की बड़ी जीत
  10 सीटों पर विजय
- मध्यप्रदेश में क्लीन स्वीप

543	293	232	18
लोकसभा की कुल सीटें	एनडीए भाजपा 240	इंडिया कांग्रेस 99	अन्य क्षेत्रीय, निर्दलीय

केंद्र में एक बार फिर मोदी सरकार बनेगी। लोकसभा सीटों की मतगणना में रुझान-परिणाम बता रहे हैं कि भाजपानीत एनडीए गठबंधन ने बहुमत का जादुई आंकड़ा पार कर लिया। दावे और नारों के अनुरूप एनडीए को 400 सीटें तो नहीं मिली, पर सरकार बनाने के लिए जरूरी 272 से ज्यादा 300 सीटों के करीब पहुंच गया। इंडिया गठबंधन ने एनडीए को 293 के आंकड़े के पास ही रोक दिया। इंडिया गठबंधन ने 232 सीटें हासिल की। इनमें अकेली कांग्रेस की 99 सीटें हैं। इस चुनाव में भाजपा के लिए सबसे बड़ा उलटफेर उत्तरप्रदेश ने किया। यहां समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने भाजपा से आधी सीटें छीन लीं। इंडिया गठबंधन यहां 44 सीटों पर आगे रहा। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ में भाजपा ने एकतरफा जीत दर्ज की। मप्र में सभी 29 और छत्तीसगढ़ की 11 में से 10 सीटों पर भाजपा ने जीत दर्ज की। रुझान और परिणामों के साथ ही तमाम राजनैतिक दलों की सरगर्मी बढ़ गई। एक समय ऐसा आया, जब इंडिया गठबंधन को भी जोड़ तोड़ कर सरकार बनाने की संभावना टटोलते देखा गया।

एग्जिट पोल की खुल गई पोल

नतीजे ऐसे आए कि भाजपा खुश और कांग्रेस भी खुश

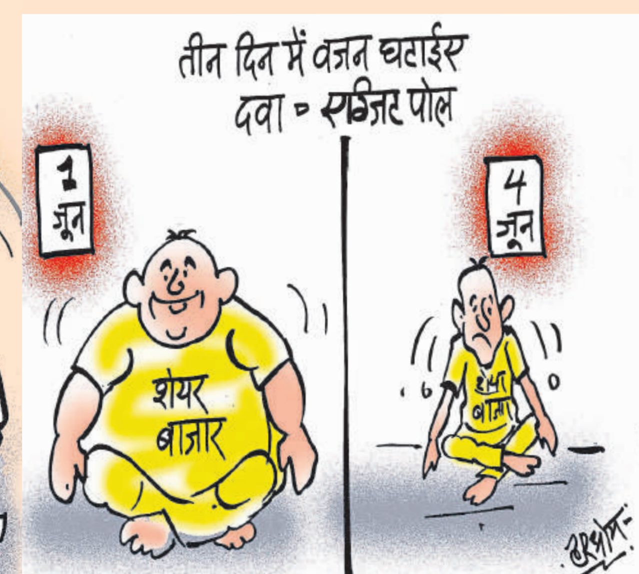

दिग्गज जीते

नरेंद्र मोदी, अमित शाह, राजनाथ सिंह, राहुल गांधी, कुमारी सैलजा, शशि थरूर

दिग्गज हारे

स्मृति ईरानी, अर्जुन मुण्डा, अधीर रंजन चौधरी, वाई.एस. शर्मिला रेड्डी, उज्जवल निकम, साधवी ज्योति

लोकसभा के चुनाव परिणाम और रुझानों ने चौंकाया, एनडीए के 400 पार का सपना रहा अधूरा

कश्मीर में लोकसभा चुनाव हार गए उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती

इंदौर में भाजपा प्रत्याशी शंकर लालवानी की सबसे बड़ी जीत

न प्यार, न तिरस्कार एनडीए तीसरी बार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नई दिल्ली

लोकसभा के 2014 और 2019 के चुनाव नतीजों के विपरीत इस बार भाजपा बहुमत के लिए जरूरी जादुई आंकड़े से पीछे रही। परिणाम और रुझानों से स्पष्ट है कि देश में गठबंधन की सरकार बनेगी। भाजपा को ओडिशा, तेलंगाना जैसे राज्यों में फायदा हुआ है, लेकिन ये फायदा नुकसान की भरपाई करने के लिए नाकाफी साबित हुआ। मुंबई नॉर्थ सेंट्रल सीट से भाजपा उम्मीदवार उज्जवल निकम को हार का सामना करना पड़ा है। कांग्रेस की वर्षा गायकवाड़ ने जीत हासिल की है। उत्तर प्रदेश में हाशिए पर पहुंची कांग्रेस को इन चुनाव में संजीवनी मिली है और पार्टी सात लोकसभा सीटों पर आगे चल रही है। कांग्रेस राज्य की सहारनपुर, अमरोहा, सीतापुर, रायबरेली, अमेठी, इलाहाबाद और बाराबंकी सीट से आगे चल रही है। इधर, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद टीडीपी प्रमुख चंद्रबाबू नायडू से बात की है।

बिहार के सीएम नीतीश कुमार से मिलने बिहार बीजेपी के अध्यक्ष और उनकी ही सरकार में डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी सीएम हाउस पहुंचे। हालांकि, ऐसी खबरें हैं कि नीतीश कुमार से सम्राट चौधरी की मुलाकात नहीं हो पाई। नीतीश ने एक दिन पहले ही दिल्ली में पीएम मोदी से मुलाकात की थी। अब सम्राट चौधरी से नीतीश की मुलाकात नहीं हो पाने के बाद अटकलों का बाजार गर्म हो गया है। कयासों के बीच आरजेडी ने दावा किया है कि नीतीश कुमार ने कहा है कि वे बदले की राजनीति के पक्ष में नहीं हैं और वह कोई बड़ा फैसला ले सकते हैं। हालांकि, जेडीयू महासचिव और प्रवक्ता केसी त्यागी ने कहा है कि हम एनडीए में हैं और एनडीए में ही रहेंगे।

यूपी में कांग्रेस को मिली संजीवनी

उत्तर प्रदेश में हाशिए पर पहुंची कांग्रेस को इन चुनाव में संजीवनी मिली है। पार्टी ने छह लोकसभा सीटों पर जीत हासिल की। कांग्रेस राज्य की सहारनपुर, सीतापुर, रायबरेली, अमेठी, इलाहाबाद और बाराबंकी सीट से जीत हासिल की है।

प. बंगाल में खेला, 42 में से ममता को 29

पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनाव में भाजपा को बड़ा झटका मिला है। 42 लोकसभा सीटों वाले राज्य में तृणमूल कांग्रेस 29 सीटों पर विजयी रही। 12 सीटें भाजपा के खाते में और एक सीट कांग्रेस के खाते में आई है। दो दिन पहले आए एग्जिट पोल में भाजपा को 28 से 31 सीटें दी गई थीं। वहीं सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस को 11-14 सीटें मिलने की बात कही गई थी। असल नतीजों में बाजी पलटती दिख रही है।

परिणाम के बाद भाजपा दफ्तर पहुंचे पीएम

मोदी बोले- देशवासियों ने जताया पूर्ण विश्वास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की जीत को 'विकसित भारत' के प्रण की जीत करार दिया और कहा कि इस चुनाव में देशवासियों ने भारतीय जनता पार्टी और उसके नेतृत्व वाले गठबंधन पर 'पूर्ण विश्वास' जताया है। चुनाव नतीजे स्पष्ट होने के बाद भाजपा मुख्यालय में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, आज की ये विजय दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की जीत है। ये भारत के संविधान पर अटूट निष्ठा की जीत है। ये विकसित भारत के प्रण की जीत है। ये सबका साथ-सबका विकास के मंत्र की जीत है। ये 140 करोड़ भारतीयों की जीत है।

जीत का रिकॉर्ड

शंकर लालवानी	10,08,077
शिवराज सिंह चौहान	8,21,408
अमित शाह	7,44,716
राहुल गांधी वायनाड	3,64,422
बृजमोहन अग्रवाल	5,75,285

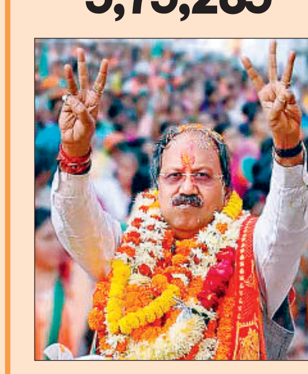

ड्रीम गर्ल कही जाने वाली हेमामालिनी की तीसरी बार जीत

हेमा की हैट्रिक, कंगना का जलवा

कई सेलेब्स भी चुनावी मैदान में अपनी किस्मत आजमाने के लिए उतरे। इनमें से बहुत से ऐसे सितारे हैं, जो सालों से राजनीति में सक्रिय हैं। बॉलीवुड अभिनेत्री कंगना रनौत हिमाचल की मंडी सीट से चुनाव जीत गईं। इस सीट पर उनका मुकाबला कांग्रेस से विक्रमादित्य सिंह के साथ था। बॉलीवुड की ड्रीम गर्ल कही जाने वाली हेमामालिनी लगातार तीसरी बार मथुरा लोकसभा सीट से चुनाव जीत गई हैं। वह 2004 में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हुई थीं। फिर वे राज्यसभा की भी सदस्य बनीं। रामानंद सागर की 'रामायण' में भगवान राम का किरदार निभाकर घर-घर में लोकप्रियता हासिल करने वाले अरुण गोविल ने मेरठ से जीत हासिल की। गोरखपुर से भाजपा प्रत्याशी रवि किशन ने दोबारा बाजी मारी। भोजपुरी एक्टर मनोज तिवारी उत्तरपूर्वी दिल्ली से चुनाव जीत गए।

टीएमसी सांसद महुआ का जादू बरकरार

पश्चिम बंगाल में एग्जिट पोल में भाजपा को बंपर फायदे की बात सामने आई थी। कृष्णानगर सीट पर महुआ मोइत्रा का जादू बरकरार रहा। उन्होंने आसान जीत हासिल कर ली है। वो भाजपा की रानी मां अमृता राय पर भारी रही। अमृता राय राजा कृष्णचंद्र राय के परिवार से ताल्लुक रखती हैं, जिनके नाम से शहर का नाम कृष्णानगर पड़ा था।

52 केंद्रीय मंत्रियों ने आजमाई किस्मत, इनमें हार गए 20

हरिभूमि न्यूज ▶▶ नई दिल्ली

नरेंद्र मोदी कैबिनेट के 52 केंद्रीय मंत्रियों ने लोकसभा चुनाव में अपनी किस्मत आजमाई। वोट की लड़ाई लड़ी गई, इस लड़ाई का अंजाम लगभग पता चल गया है। 52 केंद्रीय मंत्रियों में से 20 हार रहे हैं। चुनाव आयोग के अब तक के आंकड़े के अनुसार 20 केंद्रीय मंत्री बड़े अंतरों से हार गए। ऐसा पहली बार है जब बड़ी संख्या में मंत्रियों की हार हुई है।

- *महिला-बाल विकास मंत्री-स्मृति ईरानी*
- *कृषि मंत्री-अर्जुन मुंडा*
- *ऊर्जा मंत्री- राज कुमार सिंह*
- *भारी उद्योग मंत्री-महेंद्र नाथ पांडे चंदौली पीछे*
- राज्यमंत्री-राजीव चंद्रशेखर
- राज्यमंत्री-कपिल पाटिल
- राज्यमंत्री-कौशल किशोर
- राज्यमंत्री-रावसाहेब दानवे
- राज्यमंत्री-भगवंत खुबा
- राज्यमंत्री-भानु प्रताप सिंह वर्मा
- राज्यमंत्री-सुभाष सरकार
- राज्यमंत्री-कैलाश चौधरी
- राज्यमंत्री-एल. मुरुगन
- राज्यमंत्री-संजीव बालियान
- राज्यमंत्री-साध्वी निरंजन ज्योति
- राज्यमंत्री-भारती प्रवीण पवार
- राज्यमंत्री-वी. मुरलीधरन
- राज्यमंत्री-नित्यानंद राय
- राज्यमंत्री-अजय मिश्र टेनी
- राज्यमंत्री-निसिथ प्रमाणिक

मध्यप्रदेश में भाजपा को क्लीन स्वीप

मध्यप्रदेश में भाजपा पूरी 29 सीटों पर जीत गई। कांग्रेस के दिग्गज कमलनाथ ने हार कबूल ली। गुना-शिवपुरी संसदीय क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी ज्योतिरादित्य सिंधिया ने ऐतिहासिक जीत हासिल कर एक बार फिर सिंधिया ने अपनी वापसी की है। सिंधिया को 880666 वोट मिले, जबकि कांग्रेस के यादवेंद्र सिंह यादव को 368502 मत मिले।

एसे बोल

नई ऊर्जा, नई उमंग, नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ेंगे

पीएम मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा कि 'देश की जनता-जनार्दन ने एनडीए पर लगातार तीसरी बार अपना विश्वास जताया है। भारत के इतिहास में ये एक अभूतपूर्व पल है। देशवासियों को विश्वास दिलाता हूं कि उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए हम नई ऊर्जा, नई उमंग, नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ेंगे।

नरेन्द्र मोदी

देश चलाने के लिए मोदी-शाह की जरूरत नहीं: राहुल गांधी

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि यह चुनाव इंडिया गठबंधन और कांग्रेस पार्टी ने सिर्फ एक राजनैतिक दल के खिलाफ नहीं लड़ी। यह चुनाव हम भाजपा, हिंदुस्तान की संस्था, सीबीआई-ईडी, इन सबके खिलाफ लड़े, क्योंकि इन संस्थाओं को नरेंद्र मोदी और अमित शाह ने डराया-धमकाया। राहुल गांधी ने दो टूक कहा कि वे इस तरह से कोई बयान नहीं दे सकते हैं।

राहुल गांधी

साय सरकार ने छत्तीसगढ़ बचाया और ओडिशा में भी परचम लहराया

रायपुर। जहां महाराष्ट्र, हरियाणा और उत्तरप्रदेश में सत्ता होने के बावजूद भाजपा को झटके ही झटके लगे, वहीं छत्तीसगढ़ में भाजपा ने न केवल अपनी पुरानी सीटें बचाईं बल्कि एक सीट कांग्रेस से छीनी भी। 2019 में भाजपा के पास छत्तीसगढ़ में 9 सीटें थी,जो अब 10 हो गई है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और प्रदेशाध्यक्ष किरण देव की जुगलबंदी ने जीत का नया रिकार्ड बनाया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय, प्रदेश भाजपाध्यक्ष किरणदेव, की जुगलबंदी में ऐसी रणनीति बनाई कि कांग्रेस मुकाबले में आ ही नहीं पाई। नतीजा ये रहा कि ज्यादातर सीटों पर कांग्रेस के दिग्गज हार गए। इतना ही नहीं छत्तीसगढ़ की तर्ज पर ओडिशा का चुनाव भी लड़ा गया। जिन योजनाओं को लेकर छत्तीसगढ़ विधानसभा में परचम लहराया गया था, उन्ही योजनाओं को लेकर भाजपा ओडिशा के चुनाव में उतरी। मुख्यमंत्री समेत भाजपा के दिग्गजों ने भी वहां डेरा डाला था। अब भाजपा ओडिशा में सरकार बनाने जा रही है। भाजपा ने चौबीस साल का इतिहास बदलकर सरकार बना ली है।

यह जनता की जीत है, मोदी के खिलाफ जनादेश

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि यह जनता की जीत है, मोदी के खिलाफ जनादेश आया है। कांग्रेस ने इस बात पर भी जोर दिया कि चुनाव के दौरान उन्हें रोकने के लिए सत्ताधारी दल ने हर संभव कोशिश की, लेकिन फिर भी जनता ने उन पर भरोसा जताया। पूरे चुनाव के दौरान जिस प्रकार का कैंपेन पीएम मोदी ने चलाया उसे लंबे समय तक याद रख जाएगा।

मल्लिकार्जुन खड़गे

किसी के दिन फिरे, किसी के दिन लदे

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव सात चरणों में पूरा होने के बाद 4 जून को मतगणना हुई। मतगणना के साथ ही यह स्पष्ट हो रहा है कि तीसरी बार भी मोदी सरकार ही देश की बागडोर थामेगी। हालांकि इस चुनाव के नतीजों के आने के पहले भाजपा को लेकर जैसी आशा लोगों में थी वह पूरी तरह से फलीभूत नहीं हो सकी। लोकसभा चुनाव में कई दिग्गजों की किस्मत दांव पर लगी थी। इनमें पूर्व एवं वर्तमान केंद्रीय मंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री व उप मुख्यमंत्री, कई पार्टियों के अध्यक्ष, लोकसभा अध्यक्ष, वर्तमान सांसदों सहित कई फिल्मी सितारों, खिलाड़ियों और अन्य विधा में पारंगत लोग भी मैदान में रहे। विपक्षी दलों के इंडिया गठबंधन ने एनडीए को अच्छी खासी चुनौती देते हुए जहां कई केंद्रीय मंत्रियों सहित बड़े-बड़े दिग्गजों को लोकसभा जाने से रोक दिया। वहीं एनडीए ने भी अपनी शक्ति दिखाते हुए विपक्षी दलों के गठबंधन के कई बड़े नेताओं को उनके घर पर ही ठहरने मजबूर कर दिया।

देश के बड़े चेहरे जिन्होंने मारी बाजी

- नीतिन गडकरी, नागपुर, भाजपा
- के एल शर्मा, अमेठी, कांग्रेस
- पीयूष गोयल, उत्तर मुंबई, भाजपा
- अरूण गोविल, मेरठ, भाजपा
- तेजस्वी सूर्या, बेंगलुरु दक्षिण, भाजपा
- अखिलेश यादव, कन्नौज, सपा

- कंगना रनावत, मंडी, भाजपा
- राजनाथ सिंह, लखनऊ, भाजपा
- बंटी विवेक साहू, छिंदवाड़ा, भाजपा
- अभिषेक बैनर्जी, डायमंड हार्बर, टीएमसी
- पंकजा मुण्डे, बीड़, भाजपा
- डिम्पल यादव, मैनपुर, सपा

- नारायण राणे, रत्नागिरी, भाजपा
- चंद्रशेखर, नगीना, सपा
- जीतनराम मांझी, गया, एचएएम
- महेश शर्मा, गौतमबुद्ध नगर, भाजपा
- राज बब्बर, गुड़गांव, कांग्रेस
- चरणजीत सिंह, जालंधर, कांग्रेस

- हेमा मालिनी, मथुरा, भाजपा
- मुकेश दलाल, सूरत, भाजपा
- हनुमान बेनीवाल, नागौर, कांग्रेस
- शिवराज सिंह, विदिशा, भाजपा
- रवि किशन, गोरखपुर, भाजपा
- त्रिवेंद्र रावत, हरिद्वार, भाजपा

- सुप्रिया सुले, बारामती, एनसीपी
- प्रहलाद जोशी, धारवाड़, भाजपा
- बांसुरी स्वराज, नई दिल्ली, भाजपा
- पुरुषोत्तम रूपाला, राजकोट, भाजपा
- ज्योतिरादित्य सिंधिया, गुना, भाजपा
- शशि थरुर, तिरुवंतपुरम, कांग्रेस

- शत्रुघ्न सिंह, आसनसोल, टीएमसी
- वीडी शर्मा, खजुराहो, भाजपा
- महुआ मोइत्रा, कृष्णानगर, टीएमसी
- मनोज तिवारी, उत्तर दिल्ली, भाजपा
- डॉ. जितेंद्र सिंह, उधमपुर, भाजपा
- गिरिराज सिंह, बेगूसराय, भाजपा

राजनीति के दिग्गज जो नहीं बचा पाए सीट

- स्मृति ईरानी, अमेठी, भाजपा
- उमर अब्दुल्ला, बारामूला, जेकेएनएफ
- दिग्विजय सिंह, राजगढ़, कांग्रेस
- अधीर रंजन, बहरामपुर, कांग्रेस
- माधवी लता, हैदराबाद, भाजपा
- महबूबा मुफ्ती, अनंतनाग, जेकेपीडीपी

- नकुल नाथ, छिंदवाड़ा, कांग्रेस
- नवनीत राणा, अमरावती, भाजपा
- मेनका गांधी, सुल्तानपुर, भाजपा
- पवन सिंह, काराकाट, निर्दलीय
- वीरेन्द्र रनावत, हरिद्वार, कांग्रेस
- विक्रमादित्य, मंडी, कांग्रेस

- चंद्रभूषण चंदेल, बुंदेला, कांग्रेस
- उज्जवल निकम, मुंबई नार्थ सेंट्रल, भाजपा
- ज्योति मिर्धा, नागौर, भाजपा
- सुनेत्रा पवार, बारामती, एनसीपी
- दिनेश यादव, जबलपुर, कांग्रेस
- रोहणी आचार्य, पाटलिपुत्र, राजद

- प्रताप सिंह खरियावास, जयपुर, कांग्रेस
- अर्जुन मुंडा, खूंटी, भाजपा
- सीपी जोशी, भीलवाड़ा, कांग्रेस
- अजय मिश्र टेनी, लखीमपुर, भाजपा
- प्रहलाद गुंजाम, कोटा, कांग्रेस
- कैलाश चौधरी, बाड़मेर, भाजपा

- संजीव बालियान, मुजफ्फरनगर, भाजपा
- महेंद्रनाथ पांडेय, चंदौली, भाजपा
- आर के सिंह, आरा, भाजपा
- अवधेश राय, बेगूसराय, सीपीआई
- करण सिंह, जोधपुर, कांग्रेस
- वैभव गहलोत, जालौर, कांग्रेस

- ललित यादव, अलवर, कांग्रेस
- राव इंद्रजीत, गुरुग्राम, भाजपा
- रणजीत चौटाला, हिसार, भाजपा
- गोविंदराम मेघवाल, बीकानेर, कांग्रेस
- यादवेंद्र सिंह यादव, गुना, कांग्रेस
- तंवर सिंह लोधी, दमोह, कांग्रेस

■ छत्तीसगढ़ में फिर भाजपा का जादू

हरिभूमि
छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित
समाचार ही नहीं, विचार भी

छत्तीसगढ़ में रायपुर से भाजपा प्रत्याशी बृजमोहन को सबसे बड़ी लीड

छत्तीसगढ़ लोकसभा
कुल सीट 11
भाजपा- 10/ कांग्रेस- 1

भाजपा 'एकतरफा', कांग्रेस को 'सांत्वना'

» कोरबा में ज्योत्सना सरोज पांडेय पर भारी

» कांकेर में वीरेश ने भाजपा को दी टक्कर

छत्तीसगढ़ में कमल की जड़ें और गहरी, 11 में से 10 पर जीत, कांग्रेस से केवल महंत ने भेदा चक्रव्यूह

● रायपुर लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
बृजमोहन अग्रवाल	विकास उपाध्याय
10,50,351	4,75,066
जीते ↑	↓ हारे

● महासमुंद लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
रूप कुमारी चौधरी	ताम्रध्वज साहू
7,03,659	5,58,203
जीते ↑	↓ हारे

● दुर्ग लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
विजय बघेल	राजेंद्र साहू
9,56,497	5,18,271
जीते ↑	↓ हारे

● बस्तर लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
महेश कश्यप	कवासी लखमा
4,58,398	4,03,153
जीते ↑	↓ हारे

● सरगुजा लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
चिंतामणि महाराज	शशि सिंह
7,13,200	6,48,378
जीते ↑	↓ हारे

लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी ने फिर साबित कर दिया है कि छत्तीसगढ़ में कमल की जड़ें बहुत गहरी हैं। संगठन, रणनीति और मैदानी मेहनत में कांग्रेस भाजपा के आसपास भी नहीं है। प्रदेश की 11 में से 10 सीटों पर भाजपा के प्रत्याशी जीते। कांग्रेस के खाते में केवल कोरबा सीट ही आई। कांग्रेस के कद्दावर नेता पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा के संतोष पांडेय से मात खा गए। श्री बघेल को शुरूआती बढ़त मिली थी लेकिन उसके बाद संतोष पांडेय ने बाजी मार ली। रायपुर में भाजपा के वरिष्ठ नेता बृजमोहन अग्रवाल कांग्रेस के विकास उपाध्याय से पहले राउंड से ही आगे रहे। उन्होंने रिकार्ड पौने छह लाख वोटों से जीत हासिल की। भाजपा ने बस्तर, सरगुजा, बिलासपुर, दुर्ग, रायगढ़, जांजगीर चांपा, महासमुंद में शानदार जीत हासिल की है।

हरिभूमि न्यूज ⏭ रायपुर

छत्तीसगढ़ की 11 सीटों को लेकर जिस तरह के अनुमान लगाए जा रहे थे, नतीजे भी उसी के अनुरूप नजर आ रहे हैं। भाजपा ने छत्तीसगढ़ में जीत के लिए अपनी पूरी ताकत झोंकी थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री अमित शाह से लेकर भाजपा के शीर्ष स्तर के नेताओं ने यहां आकर कई जनसभाएं ली थीं। राज्य के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ की सभी 11 सीटों पर चुनाव प्रचार किया, कार्यकर्ता सम्मेलन कर पार्टी के पक्ष में वातावरण बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी। नतीजों से साफ हो रहा है कि भाजपा के शीर्ष नेतृत्व समेत राज्य नेतृत्व की मेहनत रंग लाई है।

वोटों के लीडर, बृजमोहन अग्रवाल और विजय बघेल

वरिष्ठ विधायक बृजमोहन अग्रवाल और विजय बघेल की जीत को लेकर कोई संदेह नहीं था। सबसे बड़ा सवाल केवल उनकी अधिक लीड का था। इस मामले में रायपुर लोकसभा के प्रत्याशी बृजमोहन अग्रवाल का नाम प्रमुखता से लिया जा रहा था। दरअसल उन्होंने 2023 के विधानसभा चुनाव में रायपुर दक्षिण सीट से 67 हजार से अधिक वोटों से रिकार्ड जीत हासिल की थी। यही नहीं, वे विधानसभा के आठ चुनाव लगातार जीत चुके हैं। इस लोकसभा चुनाव में वे अब तक वे अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के विकास उपाध्याय से 5 लाख 75 हजार 285 वोटों से जीते। लीड के मामले में श्री अग्रवाल से दुर्ग सीट के भाजपा प्रत्याशी विजय बघेल मुकाबले में हैं। उनका मुकाबला कांग्रेस के राजेंद्र साहू से हो रहा है। विजय बघेल यहां 4 लाख 38 हजार 226 वोटों से जीते। खास बात ये है कि 2019 के लोकसभा चुनाव में विजय बघेल इसी सीट से रिकार्ड 3 लाख 90 हजार वोटों से जीते थे।

बस्तर की सीट कांग्रेस से छीनी भाजपा ने

बस्तर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी महेश कश्यप अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के कवासी लखमा से जीत हासिल की। इस सीट पर 2019 में कांग्रेस के दीपक बैज जीते थे। उनकी टिकट कटी और कवासी लखमा को चुनाव में उतारा गया। अनुमान है भाजपा सीट जीतने में सफल होगी। कांग्रेस प्रत्याशी कवासी लखमा बस्तर की कोंटा सीट से विधानसभा के पांच चुनाव लगातार जीत चुके हैं, वे पहली बार लोकसभा में प्रत्याशी बनाए गए थे, लेकिन भाजपा की ओर से पहली बार लोकसभा का चुनाव लड़ने वाले महेश कश्यप के हाथों उनकी हार हुई। श्री लखमा को महेश कश्यप ने 55 हजार 245 वोटों से हराया।

महासमुंद में ताम्रध्वज की हार

महासमुंद लोकसभा में भाजपा ने एक बार फिर परचम लहराया है। हालांकि यहां पर भाजपा ने अपना प्रत्याशी बदला था। और कांग्रेस ने पूर्व गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू को मैदान पर उतारा था। यहां पर जातीय समीकरण को देखते हुए कांग्रेस को भरोसा था। यहां पर लोगों भाजपा प्रत्याशी रूपकुमारी को अपना समर्थन दिया। वे 1 लाख 45 हजार 456 वोटों से जीती। इसी सीट पर कांग्रेस को जातीय समीकरण के हिसाब से साहू मतदाताओं का साथ मिलने की उम्मीद थी, लेकिन ये भरोसा काम नहीं आया।

जांजगीर में जांगड़े की जीत

जांजगीर लोकसभा की सीट पर भाजपा प्रत्याशी कमलेश जांगड़े ने कांग्रेस प्रत्याशी शिव कुमार डहरिया पर निर्णायक बढ़त बनाई। कांग्रेस ने इस लोकसभा सीट पर बढ़ी उम्मीद लगाई थी। यहां पर सभी विधानसभा सीटों में कांग्रेस विधायक होने के कारण एससी आरक्षित सीट पर दूसरे चरण में संविधान परिवर्तन के मुद्दे का जोरदार प्रचार किया था। यहां पर भाजपा की महिला प्रत्याशी ने 60 हजार से जीत दर्ज की। 2019 के चुनाव में भाजपा ने यह सीट जीती थी, लेकिन इस बार प्रत्याशी बदलने के बाद भी यहां पर अपना परचम लहराया।

कांकेर में कड़ी टक्कर, केवल 18 से हार गए ठाकुर

बस्तर संभाग की कांकेर लोकसभा सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी वीरेश ठाकुर और भाजपा के भोजराज नाग के बीच कांटे का मुकाबला रहा। कई बार ऐसा लगा कि वीरेश ठाकुर जीत के करीब हैं। आंकडे ऊपर नीचे होते रहे। आखिर में वीरेश करीब 18 सौ 84 वोटों से पराजित हुए। भाजपा ने कड़े मुकाबले में कांग्रेस को हरा दिया। खास बात ये है कि 2019 में भी इस सीट पर कांटे का मुकाबला हुआ था। उस चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी वीरेश भाजपा के मोहन मंडावी से करीब साढ़े 6 हजार वोटों के अंतर से हार थे, यही कारण है कि भाजपा ने 2019 के विजयी प्रत्याशी मोहन मंडावी का टिकट काट दिया था। कांग्रेस ने वीरेश ठाकुर पर दूसरी बार भरोसा जताया था।

रायगढ़ में भी जीत का परचम

रायगढ़ लोकसभा सीट पर भाजपा से राधेश्याम राठिया और कांग्रेस ने रायगढ़ राजघराने की डॉ. मेनका सिंह को मैदान पर उतारा। यह लोकसभा मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के गृह जिले से संबंधित होने के कारण भाजपा के लिए महत्वपूर्ण थी। सीएम के पसंद के प्रत्याशी को यहां से उतारा गया था। यहां से भाजपा ने ढाई लाख मतों की निर्णायक बढ़त ले ली। मतों की गिनती में वे शुरू से ही बढ़त बनाए हुए थे। इस सीट पर भाजपा ने 2 लाख 40 हजार 391 वोटों से जीत दर्ज की।

कांग्रेस से भाजपा गए चिंतामणी महाराज जीते

सरगुजा लोकसभा सीट पर भाजपा प्रत्याशी चिंतामणी महाराज 64 हजार 822 वोटों से जीते। खास बात ये है कि वे विधानसभा चुनाव 2023 के समय वे कांग्रेस में थे, लेकिन पार्टी ने उन्हें टिकट नहीं दिया था। इसके बाद वे भाजपा में शामिल होकर 2024 लोकसभा में भाजपा प्रत्याशी बने थे। उनके मुकाबले कांग्रेस ने शशि सिंह को उतारा था। शशि सिंह पूर्व कांग्रेस नेता तुलेश्वर सिंह की बेटी है। चिंतामणी महाराज के मुकाबले वे चुनावी मैदान में टिक नहीं पाई।

बिलासपुर में भाजपा के तोखन की जीत

बिलासपुर लोकसभा सीट से भाजपा के तोखन साहू ने कांग्रेस प्रत्याशी देवेंद्र यादव को 1 लाख 62 हजार 828 वोटों से हरा दिया। देवेंद्र दुर्ग से बिलासपुर जाकर चुनाव लड़े थे। इस सीट पर कांग्रेस ने जिस प्रत्याशी को उतारा वे भिलाई विधानसभा सीट के विधायक हैं। उन्होंने 2023 और 2018 के विधानसभा चुनाव में यह सीट जीती थी। लेकिन पार्टी ने उन्हें इस बार बिलासपुर लोकसभा सीट से उतार दिया था। श्री यादव को बिलासपुर में बाहरी प्रत्याशी माना जा रहा था।

राजनीति के चक्रव्यूह को भेद
फिर जीतीं महंत

नेता प्रतिपक्ष चरण दास महंत ने एक बार फिर जता दिया कि वे छत्तीसगढ़ के अजातशत्रु हैं। इस बार छत्तीसगढ़ में भाजपा की सुनामी में कांग्रेस के सभी दिग्गज धराशाही हो गए लेकिन चरणदास महंत की धर्मपत्नी ज्योत्सना महंत ने कोरबा में बेहद कठिन मुकाबले में सरोज पांडेय को 43 हजार 283 वोटों से मात दे दी। खास बात ये है कि 2019 के लोकसभा चुनाव में मोदी-भाजपा की लहर के बीच भी ज्योत्सना मंहत ने यह सीट जीती थी। दूसरी ओर भाजपा ने अपनी तेजतर्रार मानी जाने वाली नेत्री सरोज पांडेय को उतारा था। वे भिलाई की निवासी हैं। सरोज इससे पहले राज्य सभा सदस्य, विधायक, लोकसभा सदस्य(दुर्ग सीट) और दुर्ग की मेयर भी रह चुकी हैं। लेकिन कोरबा के मुकाबले में वे ज्योत्सना से पिछड़ गईं।

राजनांदगांव में भूपेश ने दी कड़ी टक्कर

राजनांदगांव सीट प्रदेश में हाईप्रोफाइल सीट मानी जा रही थी। यहां पर कांग्रेस से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने

भाजपा के सांसद संतोष पांडेय को कड़ी टक्कर दी। शुरुआती रुझान में भूपेश बघेल यहां से आगे चल रहे थे। गिनती के पांच राउंड के बाद वे पीछे होते गए। वे हर राउंड में अपने निकटतम प्रत्याशी को कड़ी टक्कर देते नजर आए। अंतिम राउंड तक भूपेश बघेल 44 हजार 411 मतों से पीछे रह गए। यहां पर कांग्रेस की ओर से लगातार प्रचार के जरिए उन्होंने भाजपा के सामने चुनौती पेश की थी। राजनांदगांव सीट से भाजपा ने पिछले चुनाव में भी संतोष पांडेय ने जीत दर्ज की थी।

इतिहास में पहली बार दुर्ग जिले के चार नेता बाहर जाकर चुनाव लड़े और सभी हार गए

भूपेश बघेल, ताम्रध्वज साहू, देवेंद्र यादव के साथ सरोज पांडेय को मिली हार

हरिभूमि न्यूज ⏭ रायपुर

छत्तीसगढ़ के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ, दुर्ग जिले के चार दिग्गज नेता दूसरे जिलों में जाकर लोकसभा का चुनाव लड़े और चारो को हार का सामना करना पड़ा। इनमें कांग्रेस के तीन नेता पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पूर्व गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू और विधायक देवेंद्र यादव के साथ भाजपा की नेत्री पूर्व राज्यसभा सांसद सरोज पांडेय हैं।

इस बार लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस और भाजपा ने जब अपने प्रत्याशियों का चयन किया, तो कांग्रेस ने इस बार दुर्ग जिले के नेताओं पर ज्यादा भरोसा जताया। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को जहां पार्टी ने राजनांदगांव से प्रत्याशी बनाया, वहीं ताम्रध्वज साहू को महासमुंद से मैदान पर उतारा। भिलाई के विधायक देवेंद्र यादव को बिलासपुर से मैदान पर उतारा गया। इधर भाजपा ने भी पहली बार दुर्ग से राज्यसभा सांसद सरोज पांडेय को कोरबा से मैदान पर उतारने का काम किया।

जनता ने किसी को नहीं किया स्वीकार

दुर्ग जिले के जिन भी नेताओं को दूसरे जिलों में प्रत्याशी बनाकर मैदान में उतारा गया, उन सबको वहां की जनता ने सिरे से नकार दिया। जब नतीजे देर शाम तक सामने आए, तो इसमें सभी को हार का सामना करना पड़ा। राजनांदगांव से भूपेश बघेल को भाजपा के संतोष पांडेय से हार का सामना करना पड़ा। महासमुंद में ताम्रध्वज साहू को भाजपा की रूपकुमारी चौधरी से मात मिली। बिलासपुर में देवेंद्र यादव को भाजपा के तोखन साहू ने मात दी।

शिव डहरिया भी हारे

वैसे दूसरे जिलों में चुनाव लड़ने वालों में एक नाम पूर्व मंत्री शिव डहरिया का भी है। वे रायपुर जिला छोड़कर जांजगीर चांपा गए और उनको वहां पर हार का सामना करना पड़ा। इस तरह से देखें तो प्रदेश के पांच नेता दूसरे जिलों में चुनाव लड़े और सभी को उन जिलों की जनता ने नकार दिया।

● जांजगीर-चांपा ●

भाजपा	कांग्रेस
कमलेश जांगड़े	शिवकुमार डहरिया
6,78,199	6,18,199
जीते ↑	↓ हारे

● कोरबा लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
सरोज पांडेय	ज्योत्सना महंत
5,26,899	5,70,182
हारे ↓	↑ जीते

● रायगढ़ लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
राधेश्याम राठिया	डॉ. मेनका देवी सिंह
8,08,275	5,67,884
जीते ↑	↓ हारे

● कांकेर लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
भोजराज नाग	बीरेश ठाकुर
5,97,624	5,95,740
जीते ↑	↓ हारे

● बिलासपुर लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
तोखन साहू	देवेंद्र सिंह यादव
7,24,937	5,60,379
जीते ↑	↓ हारे

● राजनांदगांव लोकसभा ●

भाजपा	कांग्रेस
संतोष पांडेय	भूपेश बघेल
7,12,057	6,67,646
जीते ↑	↓ हारे

अरुणाचल प्रदेश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ हुए हैं। भाजपा ने अरुणाचल की दो लोस सीटों के साथ-साथ विधानसभा में लगातार तीसरी बार कब्जा जमाया है। 60 सदस्यीय विधानसभा में 46 सीटों के साथ भाजपा ने बहुमत हासिल किया है। इस जीत पर केंद्रीय मंत्री रिजिजू ने कहा, जीत का सबसे महत्वपूर्ण कारण पीएम मोदी का दूरदर्शी नेतृत्व है। नरेंद्र मोदी 2014 में पीएम बने. फिर बीजेपी असम, मणिपुर और त्रिपुरा में सत्ता में आई और मेघालय और सिक्किम में गठबंधन सरकारें बनाई. पूर्वोत्तर को अब लगता है कि कोई उनकी बात सुनता है। "

अरुणाचल प्रदेश में हैं दो लोकसभा सीट

रिजिजू ने लड़ा था अरुणाचल पश्चिम से चुनाव

रिजिजू 2 लाख मतों से जीते

अरुणाचल प्रदेश की दोनों सीटों पर खिला कमल

एजेंसी ▸▸ इटानगर

अरुणाचल प्रदेश की दोनों लोक सभा सीटों पर एक बार फिर भाजपा ने जीत हासिल करते हुए कमल खिला दिया है। अरुणाचल पश्चिम से भाजपा उम्मीदवार एवं केंद्रीय मंत्री किरन रिजिजू ने 205417 मत प्राप्त कर भारी जीत हासिल की है। उन्होंने कांग्रेस के उम्मीदवार नबाम तुकी को 100738 मतों के अंतर से हराया है। नबाम तुकी को कुल 104679 मत, निर्दलीय उम्मीदवार तेजी राणा को 33314, गण सुरक्षा पार्टी के उम्मीदवार टोको शीतल को 30530 मत, निर्दलीय उम्मीदवार बिमपाक सिगा को 11518 मत, निर्दलीय उम्मीदवार रुही टैगुंग को 7821 मत, निर्दलीय उम्मीदवार लेकी नोरबू को 2271, निर्दलीय उम्मीदवार तानिया जून को 1958 मत मिला है। नोटा पर कुल 2296 मत पड़े हैं। अरुणाचल पूर्व सीट से भाजपा उम्मीदवार तापीर गाओ ने 145581 मत प्राप्त कर जीत हासिल की है। तापीर गाओ ने कांग्रेस पार्टी के अपने निकटतम उम्मीदवार बोसीराम सिरण को 30421 मतों के अंतर से हराया है।

असम में भी भाजपा का दबदबा

असम में 14 लोकसभा सीट के लिए हुए चुनाव में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उसके सहयोगी दल असम गण परिषद (एजीपी) और यूनाइटेड पीपुल्स पार्टी लिबरल (यूपीपीएल) ने 11 सीटें जीती हैं, जबकि कांग्रेस को 3 सीटों से ही संतोष करना पड़ा है। भाजपा 9, यूपीपीएल और एजीपी को एक-एक सीट मिली है। इधर, मणिपुर में कांग्रेस दो तथा मेघालय में कांग्रेस 1 व वाइस ऑफ द पीपुल पार्टी ने एक सीट जीती हैं। त्रिपुरा, सिक्किम में क्षेत्रीय पार्टियों ने वहां की एक-एक सीट जीत ली, वहीं कांग्रेस ने नगालैंड की एक सीट पर कब्जा जमाया।

कांग्रेस को 13, उद्धव सेना 9 एनसीपी (शरद गुट) को मिली 7 सीटें

महाराष्ट्र में महासंग्राम, महाविकास अघाड़ी ने एनडीए को पीछे धकेला

महाराष्ट्र में एनडीए को तगड़ा झटका लगा है। एक्जिट पोल के विपरीत कई विशेषज्ञों ने यहां भाजपा नीत को एनडीए गठबंधन को तगड़े नुकसान की आशंका जताई थी, वहां वैसा ही हुआ। इंडिया गठबंधन ने जहां 29 सीटें जीतीं वहीं एनडीए को यहां 18 सीटें मिली हैं। एक सीट निर्दलीय उम्मीदवार के खाते में आई। जानकारी के लिए बता दें, महाराष्ट्र में कांग्रेस को 13, उद्धव सेना 9 एनसीपी (शरद गुट) को 7 सीटें मिलीं वहीं भाजपा को 10, शिंदे सेना 7 एनसीपी (अजीत गुट) को 1 सीट से संतोष करना पड़ा। शिवसेना उद्धव गुट के सामने शिवसेना शिंदे गुट को बड़ा झटका लगा है। शिवसेना नेता उद्धव ठाकरे के घर जश्न मनाया जा रहा है। सोशल मीडिया में वीडियो वायरल हो रहा है। जिसमें पार्टी के कार्यकर्ता एक दूसरे को मिठाई खिला रहे हैं। महाराष्ट्र की नासिक लोकसभा सीट से शिवसेना (उद्धव गुट) के प्रत्याशी राजाभाऊ वाजे ने बड़ी जीत दर्ज की है। उन्हें 1.60 लाख से अधिक वोट मिले हैं। शिंदे गुट को यहां से बड़ा झटका लगा है।

नरेंद्र मोदी तीसरी बार बनेंगे प्रधानमंत्री : एकनाथ शिंदे

महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे ने कहा कि ठाणे से हमारे उम्मीदवार नरेश म्हस्के को भारी जीत हासिल हुई है। मैं इन्हें बधाई देता हूं। वे ठाणे लोकसभा का विकास करेंगे। मैं सभी का और PM मोदी का अभिनंदन करता हूं, वे तीसरी बार प्रधानमंत्री बनेंगे। पीएम मोदी विकास के एजेंडे पर चुनाव लड़ रहे थे। इस देश की जनता ने विकास को वोट दिया है। जिन लोगों ने कहा था कि पीएम मोदी को तड़ीपार करो, उन लोगों को सत्ता से दूर रखकर जनता ने तड़ीपार कर दिया है।

महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल ने सबसे बड़ा 'खेला' किया है - संजय

शिवसेना (यूबीटी) नेता संजय राउत ने कहा कि देश में बदलाव होने जा रहा है। हम इसे सकारात्मक रूप से देखते हैं। शाम तक भाजपा और सीटें हार जाएंगी। वो 240 से नीचे आ जाएंगे। महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल ने सबसे बड़ा 'खेला' किया है।

कोंकण में पहली बार खिला कमल

केंद्रीय मंत्री और बीजेपी के उम्मीदवार नारायण राणे जीत गए हैं। कोंकण में आखिरकार कमल खिल गया है। राणे ने महाराष्ट्र के रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग लोकसभा सीट से जीत हासिल कर ली है। राणे को 4,14,934 वोट मिले। वहीं शिवसेना उद्धवगुट के विनायक राउत को 3,56,304 वोट मिले। नारायण राणे ने इसका श्रेय पीएम मोदी को दिया है।

कल्याण लोकसभा सीट से श्रीकांत शिंदे जीते

नंदुरबार लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी ने 1.50 लाख से ज्यादा वोटों से जीत दर्ज की है। वहीं कल्याण लोकसभा सीट से श्रीकांत शिंदे भी जीत गए हैं। जीत के बाद श्रीकांत भावुक दिखे। कल्याण लोकससभा सीट पर एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के श्रीकांत शिंदे का मुकाबला वैशाली डारेकर राणे से था।

बंगाल

बंगाल में 'दीदी' का दबदबा, मोदी मैजिक नहीं चला

लोकसभा चुनाव कांउटिंग से साफ हो गया है कि किस पार्टी को कितनी सीटें मिलीं। पश्चिम बंगाल की 42 लोकसभा सीटों का रिजल्ट भी साफ हो गया है। मंगलवार को 55 केंद्रों पर काउंटिंग हुई। पश्चिम बंगाल में बीजेपी को बड़ा झटका लगा है। वह पिछले चुनाव के मुकाबले 6 सीटें हार गई। ममता बनर्जी ने 29 सीटों पर जीत हासिल की है। वहीं भाजपा को सिर्फ 12 सीटों पर जीत मिली है। पश्चिम बंगाल लोकसभा चुनाव में डायमंड हार्बर लोकसभा सीट से तृणमूल कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव अभिषेक बनर्जी ने रिकॉर्ड मतों के साथ जीत हासिल की है। उनके साथ ही आसनसोल से टीएमसी के उम्मीदवार शत्रुघ्न सिन्हा ने बीजेपी के एसएस अहलुवालिया को, बहरामपुर से टीएमसी के उम्मीदवार यूसुफ पठान ने कांग्रेस के नेता अधीर चौधरी को और कृष्णानगर से महुआ मोइत्रा ने बीजेपी की अमृता राय को पराजित किया।. चुनाव के दौरान टीएमसी की इन हस्तियों पर लोगों की निगाहें टिकी हुई थी। पश्चिम बंगाल में अभिषेक बनर्जी ममता बनर्जी के बाद पार्टी में दूसरे नंबर के नेता हैं। उन पर पार्टी के संगठन का दायित्व है। वह इसके पहले पहले साल 2014 और 2015 में डायमंड हार्बर लोकसभा सीट से चुनाव जीत चुके हैं और इस बार तीसरी बार हैट्रिक जीत की हैट्रिक लगाई।

बहरामपुर में यूसुफ पठान ने अधीर को हराया

बहरामपुर लोकसभा सीट कांग्रेस के नेता अधीर चौधरी का गढ़ माना जाता था। बंगाल में ममता बनर्जी और अधीर चौधरी के बीच सियासी तकरार से अभी अवगत हैं। ममता बनर्जी लगातार अधीर चौधरी को पराजित करने की कोशिश कर रही थी, हालांकि पिछले पांच लोकसभा चनावों से बहरामपुर में अपनी जीत दर्ज करते आ रहे थे। इस बार ममता बनर्जी ने पूर्व क्रिकेकर यूसुफ पठान को मैदान में उतारा था। बहरामपुर में युसूफ पठान और अधीर चौधरी के बीच टक्कर मानी जा रही थी और यूसुफ पठान ने पांच बार के सांसद अधीर रंजन चौधरी को पराजित कर दिया।

बिहार

बिहार में एनडीए 30, इंडिया 9 बीजेपी-जेडीयू ने 12-12 सीटें जीतीं

बिहार लोकसभा चुनाव के नतीजे घोषित हो गए हैं। एनडीए ने 30 तो इंडिया अलायंस (महागठबंधन) ने 9 सीट पर जीत दर्ज की है, एक सीट निर्दलीय के खाते में गई है। एनडीए में बीजेपी और जेडीयू ने 12-12 सीटों पर जीत दर्ज की तो लोजपा रामविलास ने अपने कोटे की सभी पांच सीटों पर कब्जा जमाया। गया से हम सुप्रीमो जीतनराम मांझी अपनी सीट जीतने में कामयाब रहे, लेकिन आरएलएम चीफ उपेंद्र कुशवाहा काराकाट से हार गए। इसी तरह महागठबंधन में आरजेडी ने 23 सीटों पर चुनाव लड़ा और महज चार पर जीत दर्ज की। कांग्रेस ने 9 में से तीन पर अपना परचम लहराया। लेफ्ट पार्टियों में सीपीआई माले ने अपना खाता खोला और दो सीटों पर जीत दर्ज की। सीपीएम और सीपीआई अपने कोटे की एक-एक सीट हार गईं। मुकेश सहनी की वीआईपी को भी अपने कोटे की तीनों सीटों पर हार का सामना करना पड़ा। सीवान में जेडीयू की विजयलक्ष्मी कुशवाहा ने निर्दलीय हेना शहाब को हरा दिया। पूर्व सांसद आनंद मोहन की पत्नी लवली आनंद शिवहर से जीत गईं। जमुई में लोजपा रामविलास के मुखिया चिराग पासवान के जीजा अरुण भारती ने आरजेडी की अर्चना रविदास को हरा दिया। आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव की बड़ी बेटी मीसा भारती पाटलिपुत्र से जीत गईं, तो दूसरी बेटी रोहिणी आचार्या सारण से चुनाव हार गईं। अररिया में बीजेपी के प्रदीप कुमार सिंह ने जीत दर्ज कर ली।

ओडिशा

ओडिशा में बीजू जनता दल को झटका, भाजपा का कब्जा

नई दिल्ली। ओडिशा की लोकसभा सीटों के चुनाव परिणाम जारी हो गया है। जिसमें राज्य की ज्यादातर लोकसभा सीटों पर भाजपा का कब्जा हो गया है। ओडिशा की 21 लोकसभा सीटों में से 19 सीटों पर भाजपा ने जीत हासिल की है। इनके अलावा बीजद 1 सीट पर सिमट गई है। कांग्रेस के खाते में 1 सीट आई है। सत्ताधारी पार्टी बीजद केवल जाजपुर लोकसभा सीट पर और कांग्रेस कोरापुट लोकसभा सीट पर आगे चल रही थी। भाजपा बरगढ़, सुंदरगढ़, केंदुझर, संबलपुर, बलांगीर, कालाहांडी, नवरंगपुर, बरहमपुर और पुरी संसदीय क्षेत्रों में भारी जीत की कगार पर है। दूसरी ओर, बीजद की शर्मिष्ठा सेठी और कांग्रेस की सप्तगिरि उलाका क्रमशः जाजपुर और कोरापुट लोकसभा सीटों पर आगे चल रहे हैं।वहीं विधानसभा की 147 सीट में से भाजपा के 75, बीजद के 54, कांग्रेस के 16, अन्य दो उम्मीदवार आगे चल रहे हैं। चुनाव आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार, खबर लिखे जाने तक बरगढ़ में भाजपा उम्मीदवार प्रदीप पुरोहित 1,18,685 मतों के साथ आगे चल रहे हैं, इसके बाद सुंदरगढ़ में भाजपा के जुएल ओराम 70,447 मतों के साथ आगे चल रहे हैं। संबलपुर में केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान 51,539 मतों के साथ आगे चल रहे हैं, केंदुझर में भाजपा के अनंत नायक 59,147 मतों के साथ आगे चल रहे हैं।

इस बार आम आदमी पार्टी और कांग्रेस ने राज्य में बीजेपी के खिलाफ एक साथ मिलकर लड़ा था चुनाव

▪ भाजपा क्लीन स्वीप से चूकी

गुजरात में एक दशक बाद कांग्रेस ने खोला खाता

गुजरात लोकसभा चुनाव के नतीजे आ चुके हैं। 25 सीटों पर बीजेपी ने जीत हासिल कर ली है, हालांकि क्लीन स्वीप की हैट्रिक लगाने से चूक गई है। वहीं, कांग्रेस ने गुजरात में एक दशक बाद खाता खोलते हुए बनासकांठा से जीत दर्ज कर सबको चौंका दिया है।

बीजेपी ने साल 2014 और 2019 में सभी 26 सीटों पर जीत हासिल की थी। इस बार भी यही माना जा रहा था कि पार्टी क्लीन स्वीप की हैट्रिक लगाएगी। हालांकि, कांग्रेस ने बीजेपी की उम्मीदों पर पानी फेरते हुए एक सीट जीत हासिल कर ली। बता दें बीजेपी को टक्कर देने के लिए इस बार कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने गुजरात में मिलकर चुनाव लड़ा था। आप ने 2 सीटों पर और कांग्रेस ने 24 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे। लेकिन, दोनों पार्टियां मिलकर भी कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाईं। आप को जहां भरूच और भावनगर सीटों पर हार झेलनी पड़ी तो कांग्रेस भी केवल एक पर ही जीत हासिल कर पाई। हालांकि, यह

जीत भी कांग्रेस को एक दशक बाद मिली है। बनासकांठा में कांग्रेस उम्मीदवार गेनीबेन नागाजी ठाकोर ने बीजेपी उम्मीदवार को 30406 वोटों से मात देकर जीत दर्ज की है। गेनीबेन को कुल 671883 वोट मिले, जबकि बीजेपी उम्मीदवार डॉ. रेखाबेन हितेशभाई चौधरी को 641477 वोट हासिल हुए। दोनों के बीच हुई कांटे की टक्कर के बाद आखिरकार कांग्रेस ने जीत दर्ज कर ली है। इसके अलावा गुजरात की हॉट सीटों पर बीजेपी ने बंपर जीत हासिल की है।

अमित शाह 7 लाख 44 हजार वोटों से जीते

गांधीनगर लोकसभा सीट पर अमित शाह ने 7 लाख 44 हजार 716 वोटों से कांग्रेस की सोनल पटेल को हराकर दूसरी बार जीत हासिल की है और अपने पिछले साल का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है। वहीं, रजकोट लोकसभा सीट पर बीजेपी उम्मीदवार पुरुषोत्तम रूपाला ने कांग्रेस के परेश धनानी को 4 लाख 84 हजार 260 सीटों से पटखनी देकर जीत दर्ज की है। भरूच में भी बीजेपी ने बेहतरीन प्रदर्श किया है। यहां आप उम्मीदवार चैतर वसावा को हराते हुए बीजेपी के उम्मीदवार और 6 बार के सांसद मनसुख वसावा ने 85 हजार 696 वोटों से जीत दर्ज कर ली है।

झारखंड

दुमका में सीता को शिकस्त, केंद्रीय मंत्री मुंडा भी हारे

रांची। झारखंड की 14 लोकसभा सीटों में से एनडीए के खाते में 7 सीटें आई है। वहीं, इंडी गठबंधन में शामिल कांग्रेस और जेएमएम को दो-दो सीटों का फायदा हुआ है। जबकि, लेफ्ट पार्टी का खाता भी नहीं खुला है। राज्य के हॉट सीट दुमका लोकसभा सीट) पर बीजेपी को शिकस्त का सामना करना पड़ा है। चुनाव से कुछ दिन पहले जेएमएम छोड़कर बीजेपी में आईं हेमंत सोरेन की भाभी सीता सोरेन को हार का मुंह देखना पड़ा है। दुमका लोकसभा सीट पर जेएमएम नेता नलिन सोरेन ने सीता सोरेन को 22,527 मत से शिकस्त दी। नलिन सोरेन को कुल 5,47,370 मत मिले। वहीं सीता सोरेन को 5,24,843 मत मिले। इधर, बीजेपी प्रत्याशी निशिकांत दुबे ने एक ओर जहां जीत का चौका लगाया, वहीं खूंटी से केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा चुनाव हार गए हैं। कांग्रेस के कालीचरण मुंडा चुनाव जीत गए हैं।

वे मीम्स जो दिनभर चर्चा में रहे

लोकसभा चुनाव 2024 के नतीजे लगभग आ गए हैं। रुझानों से पता चलता है कि भाजपा की अगुवाई वाले एनडीए को बहुमत मिल गया है। अबकी बार 400 पार का नारा ध्वस्त हो गया है। भाजपा का 370 वाला नारा भी नहीं चल सका है। ऐसे में सोशल मीडिया पर मीम्स की बाढ़ आ गई है। जो दिनभर चर्चा में रहे । ऐसे मीम्स को 'हरिभूमि' ने सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म से अपने पाठकों के लिए संकलित किया है। इनका उद्देश्य केवल व्यंग्यात्मक दृष्टि से चुटकी लेना है। किसी की भावनाओं को आहत करने का कोई मकसद नहीं है।

सोशल मीडिया बोला- एग्जिट पोल फेंकू नहीं, उखाड़ फेंकू कहिए

राजनीति अब ऐसे मोड़ पर, जहां नए साथियों का इंतजार है...मिन्नतें हैं, मनुहार है...

दिल के अरमां आंसुओं में बह गए...

इस बार के चुनाव में 400 पार का नारा छाया रहा। भाजपा की रैलियों में यह नारा लगातार लगवाया जाता रहा कि अबकी बार 400 पार। पर नतीजे 400 पार वाले नहीं आए। वे 300 पार वाले भी नहीं आए। एनडीए 300 के भीतर ही सिमट गया और इंडी गठबंधन 232 के आसपास आ गया। सरकार एनडीए की बन रही है, यह नंबरों से तो दिख रहा है पर इंडी गठबंधन भी अब नए दोस्त तलाश रहा है, वे दोस्त जो मौके पर हिचकोले खा जाते हैं और जिनके बारे में कोई भी भविष्यवाणी नहीं कर सकता है। इस नंबर गेम में कौन नंबर गेम करेगा और कौन सरकार बनाएगा? ये नए बनने वाले फॉर्मूले पर निर्भर करता है। पर, राम मंदिर, धारा 370, तीन तलाक और महिला आरक्षण बिल के साथ 80 करोड़ लोगों को राशन मुफ्त देने के बाद भी मतदाताओं ने 400 पार पर एनडीए को नहीं पहुंचाया तो धक्का पहुंचना ही था। एक मीम्स में लिखा है- दिल के अरमां आंसुओं में बह गए। कोई पार्टी इसे दिल पर नहीं ले।

ये क्या हुआ

■ **ये सोचा तो नहीं था**
सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ये फोटो दिनभर वायरल होता रहा। जिसमें कहा गया कि ये क्या हुआ सोचा नहीं था।

क्या कर डाला

■ **यूपी के सीएम से सवाल**
सोशल मीडिया के कई प्लेटफॉर्म पर यह मीम्स खूब वायरल हुआ है, जिसमें कहा जा रहा है कि शायद पीएम पूछ रहे हैं कि ये क्या कर डाला?

मैच हम कहां हारे

■ **तुम्हें पता है ?**
सोशल मीडिया के इस मीम्स की चर्चा हो रही है, जिसमें कहा जा रहा है कि तुम्हें पता है कि ये मैच हम कहां हारे?

हमें भी बताओ?

■ **दिखाओ, क्या हाल है ?**
इस मीम्स में केंद्रीय मंत्री अमित शाह शायद कह रहे हैं कि भैया, हमें भी तो बताओ, देश में कहां कौन आगे है? कौन पीछे है?

अब कौन लुढ़केगा ?

कुछ करता हूं जिससे सबके घोड़े लग जाएं...!

सोच रहा हूं कि पलटी मारूं क्या....कहां जाऊं?

हम में भी अब दम है...

दो हास्य कवियों की 'चुटकी'

सत्यनारायण सत्तन
व्यंग्य कवि

गीत वही गायक बदले हैं, तंत्र वही नायक बदले हैं...

गीत वही गायक बदले हैं, तंत्र वही नायक बदले हैं, पीड़ाओं की परिक्रमा अनवरत चल रही, त्याग रुग्ण है स्वार्थ की आपाधापी में, दिशा भ्रांत कर्तव्य दर-ब-दर ठोकर खाता, निकल कुए से संविधान डूबा वापी में। धनुष वहीं नायक बदले हैं, गीत वही गायक बदले हैं।

सुदीप भोला
व्यंग्य कवि

शंख बजाते,रामधुन गाते खेल रहे थे भगवा धारी

शंख बजाते!
रामधुन गाते.!
खेल रहे थे भगवा धारी
मोदी ने हैट्रिक है मारी
चंद्रबाबू ने मिड ऑन देखा
बाबू नीतीश बाउंड्री पर खड़े हैं
शाह विकेट कीपिंग कर रहे है
मांझी चिराग़ गल्ली में अड़े हैं
रन थोड़े ज़्यादा ही दे दिए पर
जीत गए हैं अपनी पारी।

वेट एंड वॉच

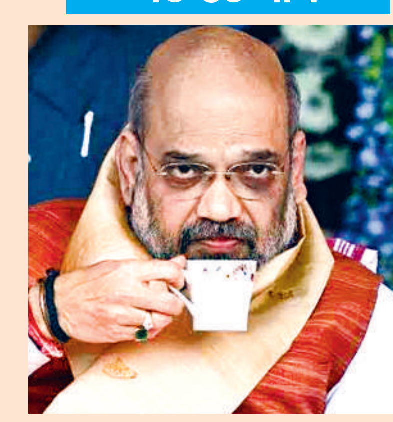

■ **देखते हैं क्या होता है ?**
केंद्रीय मंत्री अमित शाह का यह मीम्स भी एक्स पर वायरल हुआ है। जिसमें इसके मायने निकालते हुए लोग कह रहे हैं शाह वेट एंड वॉच में हैं।

किशोरी कुछ ऐसा..

■ **हार और जीत का कांबिनेशन**
अमेठी से भाजपा प्रत्याशी स्मृति ईरानी हार गई। उनको किशोरीलाल शर्मा ने हराया। स्मृति की हार पर चेहरे की ये भजन वाली भाव-भंगिमा।

हेलो...हेलो

■ **पुअर नेटवर्क**
सोशल मीडिया पर पीएम मोदी और सीएम नीतीश की फोन पर बात का मीम्स चर्चा में रहा। पीएम बोले- हेलो उधर से आवाज आई, सुनाई नहीं दे रहा।

आजा नच ले..

■ **ये बंधन तो प्यार का बंधन है**
दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल जेल में हैं। वे इंडी के पक्ष में आए रुझानों से जेल में डांस करने लगे। केजरीवाल की यह तस्वीर वायरल है।

हमारे कार्टूनिस्ट हरिओम की नजर से नतीजे

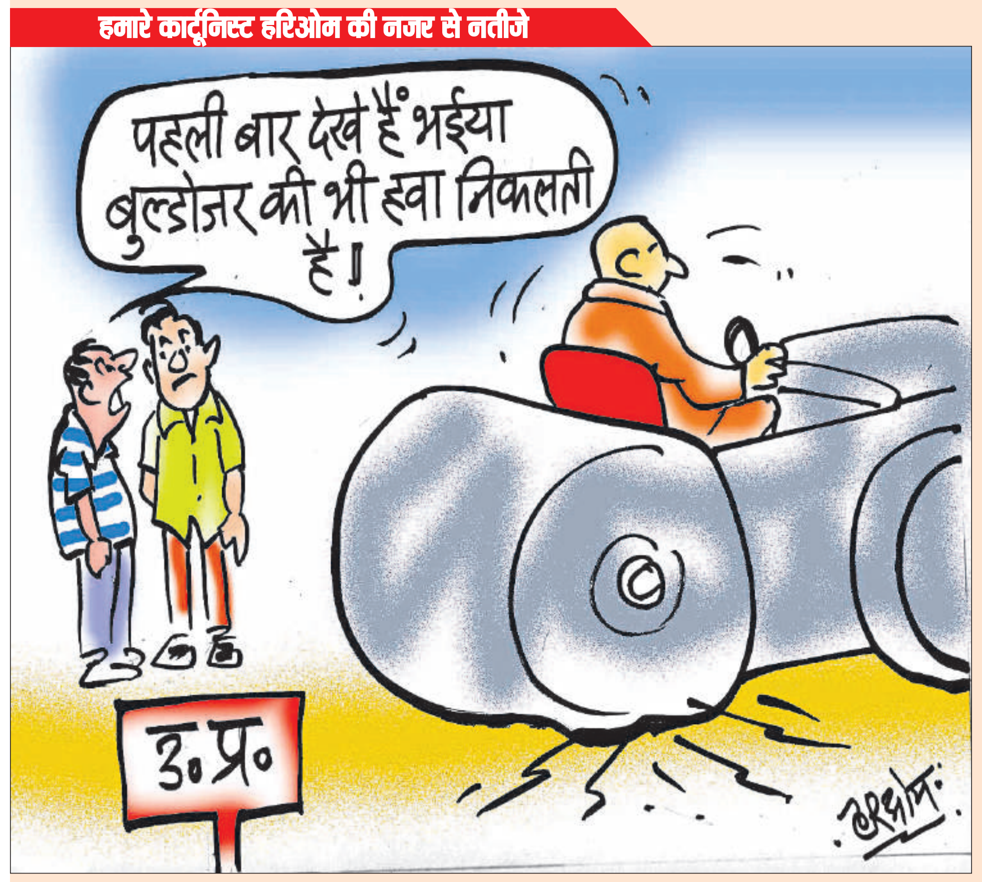

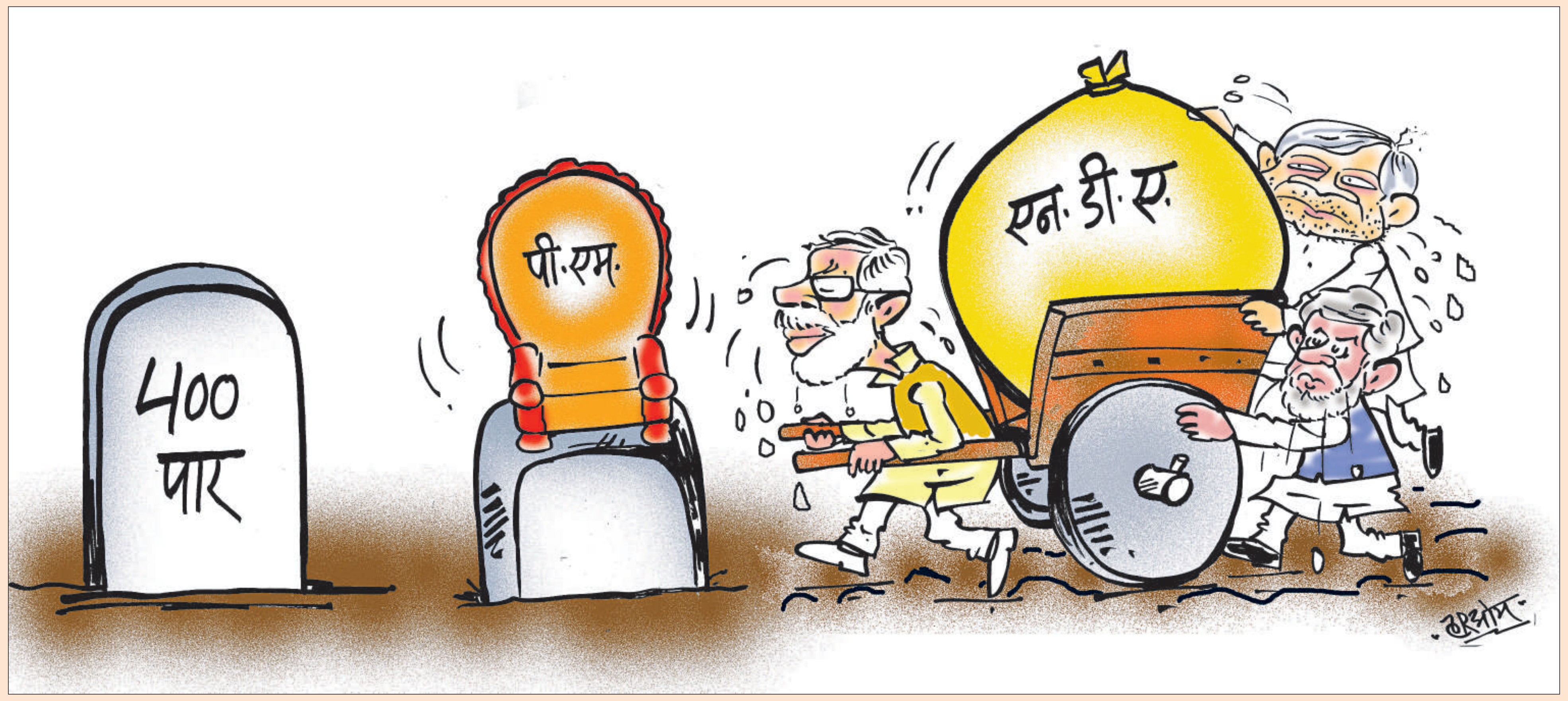

पंजाब
कुल सीट- 13
2019 के मुकाबले कांग्रेस को 1 और भाजपा को 2 सीट का नुकसान होने का अनुमान। आप को 2 सीटों का फायदा हुआ।

दल	2019	2024	(+-)
कांग्रेस	08	07	-01
भाजपा	02	00	-02
आप	01	03	+02
अन्य	02	03	+01

हरियाणा
कुल सीट- 10
2019 के मुकाबले इंडिया को 5 सीटों पर फायदा तथा भाजपा को 5 सीटों पर नुकसान दिख रहा है।

दल	2019	2024	(+-)
कांग्रेस	00	05	+05
भाजपा	10	05	-05
इनेलो	00	00	00
अन्य	00	00	00

राजस्थान
कुल सीट- 25
2019 के मुकाबले इंडिया को इस बार 08 सीट का फायदा, वहीं, भाजपा को 11 सीट का नुकसान दिख रहा है।

दल	2019	2024	(+-)
इंडिया	00	11	+11
भाजपा	25	14	-10
अन्य	00	00	-01

गुजरात
कुल सीट- 26
2019 के मुकाबले कांग्रेस को 01 सीट का फायदा दिख रहा है।

दल	2019	2024	(+-)
कांग्रेस	00	01	+01
भाजपा	26	25	-01
अन्य	00	00	00

महाराष्ट्र
कुल सीट- 48
2019 के मुकाबले इस बार इंडिया गठबंधन को 23 सीटों का फायदा, एनडीए को 22 सीटों का घाटा दिख रहा है।

दल	2019	2024	(+-)
इंडिया	05	29	+24
एनडीए	41	18	-23
अन्य	02	01	-01

कर्नाटक
कुल सीट- 28
2019 के मुकाबले इंडिया को 09 सीटों का फायदा, वहीं भाजपा को 07 सीटों का नुकसान।

दल	2019	2024	(+-)
एनडीए	26	17	-09
इंडिया	01	09	+08
अन्य	01	00	-01

केरल
कुल सीट- 20
2019 के मुकाबले इंडिया गठबंधन को 04 सीटों पर बढ़त दिख रही है। इसी तरह अन्य को 03 सीट का नुकसान।

दल	2019	2024	(+-)
इंडिया	15	14	-01
एनडीए	00	01	+01
अन्य	05	05	00

तमिलनाडु
कुल सीट- 39
इंडिया गठबंधन को 38 सीटें मिली। इसमें डीएमके-कांग्रेस की 31 सीट शामिल। एनडीए के वीसीके को सिर्फ 2 सीट मिली।

दल	2019	2024	(+-)
एआईडीएमके	01	00	-01
डीएमके-कांग्रेस	32	39	+07
एनडीए	00	00	00
अन्य	06	00	-06

आंध्रप्रदेश
कुल सीट- 25
2019 के मुकाबले वाईएसआरसीपी 18 सीटों का नुकसान। टीडीपी व एनडीए ने छलांग लगाई है।

दल	2019	2024	(+-)
वाईएसआरसीपी	22	04	-18
एनडीए	00	19	+19
अन्य	03	02	-01

तेलंगाना
कुल सीट- 17
2019 के मुकाबले कांग्रेस को 05 सीटों पर व एनडीए को 04 सीटों में बढ़त।

दल	2019	2024	(+-)
टीआरएस	09	00	-09
कांग्रेस	03	08	+05
भाजपा	04	08	+04
बीआरएस व अन्य	01	01	00

कुल सीट 543 एनडीए=293, इंडिया=232, अन्य=18

छत्तीसगढ़
कुल सीट- 11
2019 के मुकाबले कांग्रेस को 1 सीट का नुकसान और भाजपा को 1 सीट का फायदा दिख रहा है।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	09	10	+01
कांग्रेस	02	01	-01
अन्य	00	00	

दिल्ली
कुल सीट- 07
2019 की तरह 2024 में भी सारी 7 सीटें भाजपा के खाते में गई हैं।

दल	2019	2024	(+-)
कांग्रेस	00	00	00
भाजपा	07	07	00
आप	00	00	00

उत्तराखंड
कुल सीट- 05
2019 की तरह इस बार भी यहां एनडीए को 05 सीटें मिल गईं। कांग्रेस का खाता भी नहीं खुल सका।

दल	2019	2024	(+-)
कांग्रेस	00	00	00
भाजपा	05	05	00
अन्य	00	00	00

अरुणाचल
कुल सीट- 02
अरुणाचल प्रदेश की दोनों सीटें भाजपा के खाते में गईं। वहीं कांग्रेस गठबंधन को एक भी सीट नहीं मिली।

दल	2019	2024	(+-)
कांग्रेस	00	00	00
भाजपा	02	02	00
अन्य	00	00	00

मिजोरम
कुल सीट- 01
2019 में मिजोरम 1 सीट अन्य के पक्ष में गई थी। इस बार जोरम पीपुल्स मूवमेंट एक सीट जीत गई है।

दल	2019	2024	(+-)
मिजो नेशनल फ्रंट	01	00	-01
अन्य	00	01	+01

अच्छी शुरुआत

लोकसभा चुनाव में एनडीए (भाजपा और उसके सहयोगी दल) तीन सौ के करीब पहुंच गए हैं, लेकिन विपक्षी इंडिया (कांग्रेस और उसके सहयोगी दल) गठबंधन भी बहुमत से बहुत दूर नहीं है। 2019 में कांग्रेस को 52 सीटें मिली थीं। कांग्रेस ने इस बार राजस्थान, हरियाणा, कर्नाटक और तमिलनाडु में शानदार प्रदर्शन किया है। तमिलनाडु में 39 में से 38 सीटों पर इंडिया गठबंधन ने विजय दर्ज की है। यूपी में राम मंदिर और योगी फैक्टर भी भाजपा की जमीन नहीं बचा सका और भगवा पार्टी को राज्य में बड़ा झटका लगा है। यहां समाजवादी पार्टी ने शानदार प्रदर्शन किया है। 2019 में सपा को सिर्फ 5 सीटें मिली थीं जबकि इस बार उसे 33 सीटें मिलती दिखाई दे रही है। पश्चिम बंगाल के नतीजों को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी ने उम्मीद जताई थी कि इन चुनाव में पार्टी का प्रदर्शन सबसे बेहतर होगा, लेकिन परिणामों ने अलग कहानी बयां कर दी है। बंगाल में भाजपा पिछले लोकसभा चुनाव के प्रदर्शन को भी दोहरा नहीं पाई है और महज 11 सीटों पर आगे है। निश्चित रूप से सीएम ममता बेनर्जी ने जो कहा वो कर दिखाया। ममता बेनर्जी ने कहा था, 4 जून को खेला होगा और वाकई में पश्चिम बंगाल की जनता से भाजपा के साथ खेला कर दिया। महाराष्ट्र में भी भाजपा को शिवसेना यूबीटी और शरद पवार की एनसीपी से कड़ी टक्कर मिली है। महाराष्ट्र में विपक्षी गठबंधन 28 सीटों पर आगे चल रहा है। कांग्रेस 11 सीटों पर, शिवसेना यूबीटी 10 सीटों पर और एनसीपीएसपी सात सीटों पर आगे है।

त्रिपुरा
कुल सीट- 02
2019 की तरह इस बार भी यहां एनडीए को 02 सीटें मिली हैं। कांग्रेस का खाता भी नहीं खुल पाया है।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	02	02	00
कांग्रेस	00	00	00

मेघालय
कुल सीट- 02

मेघालय में वीपीपी को 01 सीट का फायदा।

दल	2019	2024	(+-)
एनपीपी	01	00	-01
कांग्रेस	01	01	00
वीओटीपीपी	00	01	+01

जीत का जश्न मनाते हुए भाजपा कार्यकर्ता।

यूपी की 80 लोकसभा सीटों में से इंडिया गठबंधन 43 सीटों पर आगे चल रहा है। परिणामों से मायूस भाजपा के लखनऊ प्रदेश कार्यालय में सन्नाटा।

पश्चिम बंगाल
कुल सीट- 42
2019 के मुकाबले टीएमसी को इस बार 08 सीटों का फायदा तथा भाजपा को 05 सीटों पर नुकसान हुआ है।

दल	2019	2024	(+-)
टीएमसी	22	29	+07
कांग्रेस	02	01	-01
सीपीएम	00	00	00
भाजपा	18	12	-06

मध्यप्रदेश
कुल सीट- 29
भाजपा ने कांग्रेस से छिंदवाड़ा सीट जीतकर कांग्रेस के पूर्व सीएम कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ को हराया।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	28	29	+01
कांग्रेस	01	00	-01
अन्य	00	00	00

बिहार
कुल सीट- 40
इस चुनाव में जेडीयू, एनडीए में शामिल है। इस दृष्टि से एनडीए की कुल 33 सीट आई हैं।

दल	2019	2024	(+-)
एनडीए	39	30	-09
इंडिया	01	09	+08
अन्य	00	01	+01

जम्मू-कश्मीर
कुल सीट- 05
2019 की तुलना में 2024 में नेशनल कांग्रेस को एक सीट का नुकसान हुआ है। इस बार एक सीट अन्य दल के खाते में गई।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	02	02	00
नेकां.	03	02	-01
अन्य	00	01	+01

लद्दाख की एक सीट अन्य के खाते में गई है।

गोवा
कुल सीट- 02
2019 की तरह ही 2024 में एक सीट भाजपा के और एक सीट कांग्रेस के खाते में गई है।

दल	2019	2024	(+-)
एनडीए	01	01	00
इंडिया	01	01	00
अन्य	00	00	00

हिमाचल
कुल सीट- 04
2019 की तरह इस बार भी कांग्रेस खाता नहीं खोल पाई। भाजपा ने सभी 4 सीटों पर जीत दर्ज की है।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	03	04	+01
कांग्रेस	01	00	-01
अन्य	00	00	00

असम
कुल सीट- 14
2019 के मुकाबले एनडीए को 02 सीटों पर बढ़त। भाजपा 9, एजीपी 1, यूपीपीएल 1 ने सीट जीती है।

दल	2019	2024	(+-)
एनडीए	09	09	00
कांग्रेस	03	03	00
अन्य	02	02	00

सिक्किम
कुल सीट- 01
सिक्किम की एक मात्र सीट सिक्किम क्रांतिकारी मोर्चा के पक्ष में गई है जो एनडीए का हिस्सा है।

दल	2019	2024	(+-)
एसकेएम	01	01	00
एसडीएफ	00	00	00

अंडमान निको.
कुल सीट- 1
केंद्र शासित राज्य अंडमान निकोबार की एकमात्र सीट इस बार भाजपा के खाते में।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	00	01	+1
कांग्रेस	01	00	-1

दादर नागर
कुल सीट- 1
दादर नागर हवेली की एक सीट पिछली बार भाजपा नहीं बचा पाई थी। इस बार यह सीट जीत ली।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	00	01	+01
कांग्रेस	00	00	00
अन्य	01	00	-01

दमन-दीव
कुल सीट- 01
2019 की तरह दमन दीव की एक सीट अन्य की झोली में गई।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	01	01	00
कांग्रेस	00	00	00
अन्य	00	01	+01

लक्षद्वीप
कुल सीट- 01
कांग्रेस उम्मीदवार मुहम्मद हमदुल्ला सईद ने एनसीपी (एसपी) के मौजूदा सांसद मोहम्मद फैजल पीपी को हराया।

दल	2019	2024	(+-)
एनडीए	00	00	00
इंडिया	00	01	+01
एनसीपी (एसपी)	01	00	-01

ढह गया दिग्गजों का किला

लोकसभा चुनाव में बिहार के पाटलिपुत्र से रामकृपाल यादव, आरा से आरके सिंह, काराकट से उपेंद्र कुशवाह और निर्दलीय पवन सिंह चुनाव हार गए हैं। महाराष्ट्र से बारामती से सुनेत्र पवार, अमरावती से नवनीत राणा, मुंबई नार्थ सेंट्रल से वकील उज्वल निकम चुनाव हार गए हैं। राजस्थान में नागौर से भाजपा की ज्योति मिर्धा, बाड़मेर से पूर्व केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, जालौर से कांग्रेस के पूर्व सीएम अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत, यूपी में अमेठी से केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी, मुजफ्फरनगर से केंद्रीय राज्य मंत्री डॉ. संजीव बालियान, खेरी से अजय कुमार मिश्र टेनी, फतेहपुर से साध्वी निरंजन ज्योति, आजमगढ़ से दिनेश लाल यादव निरहुआ, घोसी से सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के डॉ. अरविंद राजभर, बलिया से पूर्व पीएम चंद्रशेखर के पुत्र नीरज शेखर, चंदौली से केंद्रीय मंत्री डॉ. महेंद्र पांडे, सुल्तानपुर से पूर्व केंद्रीय मंत्री मेनका गांधी को हार का सामना करना पड़ा है। छत्तीसगढ़ से कांग्रेस के प्रत्याशी जिनमें राजनंदगांव से पूर्व सीएम भूपेश बघेल, महासमुंद से ताम्रध्वज साहू, बस्तर से कवासी लखमा हार गए हैं। मध्य प्रदेश से कांग्रेस के पूर्व सीएम राजगढ़ सीट से दिग्विजय सिंह, पूर्व सीएम कमलनाथ के पुत्र छिंदवाड़ा से नकुलनाथ को भी हार का सामना करना पड़ा है। पंजाब के अमृतसर से पूर्व आईएफएस अधिकारी तरणजीत सिंह सिंधू, पटियाला से पूर्व सीएम अमरिंदर सिंह की पत्नी परनीत कौर चुनाव हार गई हैं। पश्चिम बंगाल में बहरामपुर से कांग्रेस के नेता अधीर रंजन चौधरी हार गए हैं।

'खेला होबे' के नारे को सार्थक किया

चुनाव प्रचार में नारों का अपना महत्व है। एक जोरदार नारा, चुनाव परिणाम बदलने का दमखम रखता है। लोकसभा चुनाव में 1952 से अब तक नारों की बहार रही है। भाजपा ने 2014 और 2019 की तरह ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नाम पर नारे तैयार किए थे। वैसे देखा जाए तो इन नारों में हमेशा से चेहरा हावी रहा है। 1960 के दौर में विपक्ष का नारा था - 'जली झोपड़ी भागे बैल, यह देखो दीपक का खेल।' तब जनसंघ का चुनाव निशान 'दीपक' था और कांग्रेस का चुनाव निशान 'दो बैलों की जोड़ी'। कांग्रेस का पलटवार था, 'इस दीपक में तेल नहीं, सरकार बनाना खेल नहीं।' इस बार 2024 के लोकसभा चुनाव में सर्वाधिक चर्चा में 400 पार मोदी सरकार, मोदी की गारंटी, तीसरी बार मोदी सरकार, मोदी है तो मुमकिन है, हर-हर मोदी, घर-घर मोदी जैसे नारों से लड़ी गई लड़ाई लड़ी गई। लेकिन ये नारे एनडीए को बहुत ज्यादा फायदा नहीं दिला पाए। ममता बेनर्जी की ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने खेला होबे (खेला होगा) के साथ गली-गली में इस बार गर्जन, भाजपा का होगा विसर्जन- नारा दिया। पश्चिम बंगाल में आए चुनाव परिणामों से स्पष्ट हो गया है कि ममता बेनर्जी की टीएमसी ने भाजपा के साथ खेला कर दिया है। पश्चिम बंगाल में भाजपा की सीटें कम हो गई हैं।

खाता खुला

मणिपुर, लक्षद्वीप, नगालैंड और चंडीगढ़ में कांग्रेस ने अपना खाता खोला है। मणिपुर की दोनों सीटें कांग्रेस के पक्ष में गई हैं। पुडुचेरी में कांग्रेस अपनी सीट बचाने में सफल हुई है। इस बार कांग्रेस गुजरात में सेंध लगाने में कामयाब हुई। बांसकाठा से कांग्रेस की गेनीबेन नागाजी ठाकोर ने भाजपा की डॉ. रेखाबेन चौधरी को हराया है। हालांकि, गुजरात में शेष 25 सीटें भाजपा के पक्ष में गईं हैं।

दूसरी ओर भाजपा की बात करें तो हिमाचल प्रदेश में भाजपा ने 4 सीटों पर जीत दर्ज की है। उधर, ओडिशा में भाजपा ने शानदार प्रदर्शन करते हुए लगभग क्लीन स्वीप कर दिया है। भाजपा राज्य की 21 लोकसभा सीटों में से 19 पर आगे चल रही है। वहीं बीजद एक और कांग्रेस एक सीट पर आगे हैं। मध्यप्रदेश में साल 2019 के चुनाव में भाजपा ने 29 में से 28 सीटों पर जीत दर्ज की थी। लंबे समय से वह छिंदवाड़ा में जीत दर्ज नहीं कर पाई थी। इस बार भाजपा ने कांग्रेस के पूर्व सीएम कमलनाथ के गढ़ में कमल खिलाकर जीत का परचम फहराया दिया है। इसके अलावा आंध्र प्रदेश में कांग्रेस खाता खोलने में भी सफल नहीं हो पाई। जबकि भाजपा और उसके सहयोगी दलों ने 25 में से 21 सीटों पर जीत का परचम लहराया है। कुल मिलाकर जिस तरह के परिणाम आए हैं उनको देखकर जानकार यही मानते हैं कि इन नतीजों में कांटे की टक्कर दिखाई देती है।

नगालैंड
कुल सीट- 01
2019 में अन्य को एक सीट मिली थी जबकि 2024 में कांग्रेस के खाते में यह सीट गई है।

दल	2019	2024	(+-)
कांग्रेस	00	01	+01
अन्य	01	00	-01

पुडुचेरी
कुल सीट- 01
2019 में पांडिचेरी की एकमात्र सीट इस बार भी कांग्रेस के खाते में।

दल	2019	2024	(+-)
एनडीए	00	00	00
कांग्रेस	01	01	00

ओडिशा
कुल सीट- 21
2019 के मुकाबले बीजद को 11 सीटों पर नुकसान व एनडीए में भाजपा को 11 सीटों पर फायदा।

दल	2019	2024	(+-)
बीजद	12	00	-12
भाजपा	08	20	+12
कांग्रेस	01	01	00

उत्तरप्रदेश
कुल सीट- 80
2019 के मुकाबले इंडिया गठबंधन को 29 सीटों पर फायदा और एनडीए को 26 सीटों पर नुकसान।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	62	36	-30
इंडिया	04	43	+39
बसपा	10	00	-10
अन्य	00	01	+01

झारखंड
कुल सीट- 14
2019 के मुकाबले एनडीए को 01 सीट का नुकसान व इंडिया गठबंधन को 05 सीटों पर फायदा।

दल	2019	2024	(+-)
एनडीए	12	09	-03
इंडिया	02	05	+03
अन्य	00	00	00

चंडीगढ़
कुल सीट- 1
इस चुनाव में चंडीगढ़ की एक मात्र सीट इंडिया के खाते में।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	01	00	-01
कांग्रेस	00	01	+01
अन्य	00	00	00

मणिपुर
कुल सीट- 02
मणिपुर में दोनों सीटें इस बार कांग्रेस के पक्ष में गई।

दल	2019	2024	(+-)
भाजपा	01	00	-01
कांग्रेस	00	02	+02
अन्य	01	01	-01

चिंतन

आम चुनाव के नतीजे में लोकतंत्र का जनसंदेश

आम चुनाव के नतीजे ने चौंकाया। 18वीं लोकसभा के लिए सात चरणों में हुए लंबे चुनाव के चार जून को आए परिणाम में सत्ताधारी राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) अपनी सत्ता बचाने में सफल रही है, लेकिन विपक्षी गठबंधन इंडिया ने उम्मीद से बहुत अधिक प्रदर्शन किया है। चुनाव नतीजे और रुझान को देखें तो राजग की सुई 273 के जादुई आंकड़े से थोड़ा अधिक 300 के नीचे अटक गई है, तो कांग्रेस नीत इंडिया गठबंधन ने सवा दो सौ से अधिक सीटों पर विजय हासिल कर मजबूत विपक्ष का रुतबा हासिल किया है। चुनाव नतीजे और रुझान ने सभी एक्गिजट पोल्स के अनुमानों को ध्वस्त कर दिया है। 1 जून को अंतिम चरण के चुनाव के दिन आए सभी एग्जिट पोल्स में भाजपा नीत राजग को 363 से 401 तक सीट आने का अनुमान लगया गया था, साथ भाजपा को अपने दम पर बहुमत का आंकड़ा पार करने का अनुमान लगाया गया था। लेकिन अंतिम नतीजे में न ही राजग ने 300 का आंकड़ा पार किया और न ही भाजपा अपने दम पर बहुमत पा सकी। भाजपा जहां 242 पर सिमटती नजर आ रही है, वहीं राजग 295 पर अटक गया। अंतिम परिणाम आने पर सीटों की संख्या में मामूली परिवर्तन हो सकता है, लेकिन इतना तय है कि केंद्र में एक बार फिर भाजपा नीत राजग सरकार बनने जा रही है। मगर इस बार मजबूत विपक्ष भी रहेगा। विपक्षी गठबंधन इंडिया के घटक दलों में कांग्रेस ने इस बार 2019 से दोगुणी अधिक सीट हासिल की है, तो सपा, डीएमके ने शानदार प्रदर्शन किया है। पश्चिम बंगाल में टीएमसी ने भाजपा की उम्मीदों पर पानी फेरा है। टीएमसी भी इंडिया की हिस्सा है, पर चुनाव से पहले बंगाल में एकला चलो के आधार पर चुनाव लड़ी। कांग्रेस से बात नहीं बनी। राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गुजरात, राजस्थान, गोवा, असम, त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पुडुचेरी, आंध्रप्रदेश, बिहार, सिक्किम आदि राज्यों में राजग ने अच्छा प्रर्शन किया है, तो उत्तर प्रदेश, हरियाणा, झारखंड, महाराष्ट्र, लक्षद्वीप, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना आदि राज्यों में कमजोर प्रदर्शन किया है, इन राज्यों में इंडिया ने करारी टक्कर दी है। पंजाब, चंडीगढ़ में कांग्रेस ने बेहतर प्रदर्शन किया है। केंद्र में नरेंद्र मोदी ही पीएम होंगे, पर वे इस बार राजग के मुखिया होंगे। राजग के मुख्य घटक नीतीश कुमार के जदयू और चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी के हाथ में सत्ता की चाबी होगी। विधानसभा में अरुणाचल व सिक्किम के बाद ओडिशा और आंध्रप्रदेश में राजग ने शानदार प्रदर्शन किया है। केंद्र में मोदी 3:0 शासन में भाजपा मजबूत सरकार का दावा नहीं कर सकेगी। इस चुनाव परिणाम को भाजपा की नैतिक हार व कांग्रेस की राजनीतिक जीत के रूप में देखा जा सकता है। पिछले दस वर्षों से कांग्रेस जिस तरह चुनाव दर चुनाव हार रही थी, राहुल गांधी के नेतृत्व पर सवाल खड़े हो रहे थे, व कांग्रेस के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा था, इस बार की जोरदार सफलता के बाद अब इन प्रश्नों पर विराम लग जाएगा। राहुल गांधी के नेतृत्व की स्वीकार्यता जनमानस में भी और सहयोगी दलों के बीच भी बढ़ेगी। इस चुनाव में लोकतंत्र जीता है, विभाजनकारी विचारधारा हारी है। उत्तर प्रदेश में भाजपा को झटका बताता है कि राम मंदिर वोट का मार्ग नहीं बन सका। इस चुनाव में पीएम मोदी व भाजपा के खिलाफ मुस्लिमों का देशव्यापी ध्रुवीकरण देखने को मिला, बेशक वह सफल नहीं हो सका, लेकिन यह खतरनाक प्रवृत्ति जरूर है। इस परिणाम पर भाजपा को मंथन करना चाहिए, अपने राजनीतिक मुद्दों का विश्लेषण करना चाहिए और देखना चाहिए कि क्या हिंदुत्व, सनातन, मंदिर और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की धार कुंद हो रही है? केंद्र व गैर भाजपा शासित राज्यों के संबंधों को भी देखने की जरूरत है। भ्रष्टाचार के खिलाफ एक्शन के नाम पर अगर राजनीतिक उत्पीड़न की प्रवृत्ति बढ़ी है, तो इसे भी परखने की जरूरत है। अफसरशाही को खुली छूट कई बार सत्ता की राजनीति पर भारी पड़ती है। यह चुनाव परिणाम भाजपा व कांग्रेस दोनों के लिए जनसंदेश है। यह जनादेश अतिआत्मविश्वास, अतिवाद और येनकेन प्रकारेण सत्ता पाने की प्रवृत्ति के खिलाफ लोकतांत्रिक आवाज है। सत्ता पक्ष को हमेशा जनांकाक्षा के अनुरूप ही काम करना करना चाहिए। इस बार राजग सरकार बेहतर काम करेगी।

चुनाव परिणाम
उमेश चतुर्वेदी

जीत के बावजूद भाजपा को झटका

> बीजेपी को सबसे ज्यादा उम्मीद जिस उत्तर प्रदेश से रही है, वहां पार्टी की सीटें चालीस से भी नीचे रही हैं। बिहार में भी वह सबसे बड़ा दल होती थी, लेकिन इस बार उसे जनता दल यू मात देता नजर आ रहा है। वह आगे निकल गया है। पश्चिम बंगाल में उसे बड़ी जीत की उम्मीद थी, तकरीबन सारे एक्जिट पोल ऐसी ही उम्मीद जता रहे थे, लेकिन वैसा नहीं हुआ। उलटे उसकी सीटें भी घट गई। राजस्थान में भी पार्टी बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पा रही है। राज्य की आधी सीटों पर ही जीत हासिल होती नजर आ रही है। बीजेपी को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, बिहार और हरियाणा से बड़ा झटका लगा है। वह जीत कर भी हार गई है।

अठारहवीं लोकसभा चुनावों में बीजेपी भले ही सबसे बड़ी पार्टी बन कर उभरी हो, लेकिन मोटे तौर पर देखें तो यह नतीजा उसके लिए सबसे बड़ा झटका ही माना जाएगा। 2014 में जब पार्टी 283 सीटों के साथ अपने दम पर बहुमत हासिल करके सत्ता में आई थी, तब कहा गया था कि देश का मतदाता प्रबुद्ध हो गया है। उसे अस्थिर सरकारें मंजूर नहीं हैं। 2019 के आम चुनावों ने इसी धारणा को आगे बढ़ाया और ब्रांड मोदी का नाम स्थापित हो गया, लेकिन 2024 में स्थितियां बदली हुई हैं। ये पंक्तियां लिखी जाते वक्त तक भारतीय जनता पार्टी अपने दम पर ढाई सौ का आंकड़ा भी पार करती नहीं दिख रही। ऐसे में सवाल उठेंगे कि भारतीय जनता पार्टी कहां चूक गई?

बीजेपी को सबसे ज्यादा उम्मीद जिस उत्तर प्रदेश से रही है, वहां पार्टी की सीटें चालीस से भी नीचे जाती दिख रही हैं। बिहार में भी वह सबसे बड़ा दल होती थी, लेकिन इस बार उसे जनता दल यू मात देता नजर आ रहा है। वह आगे निकल गया है। पश्चिम बंगाल में उसे बड़ी जीत की उम्मीद थी, तकरीबन सारे एक्जिट पोल ऐसी ही उम्मीद जता रहे थे, लेकिन वैसा नहीं हुआ। उलटे उसकी सीटें भी घट गई। राजस्थान में भी पार्टी बेहतर प्रदर्शन नही कर पा रही है। राज्य की आधी सीटों पर ही जीत हासिल होती नजर आ रही है। पार्टी को हरियाणा में भी झटका लगा है, लेकिन प्रज्ज्वल रेवन्ना कांड के बाद जिस कर्नाटक से उसे सबसे ज्यादा झटके की उम्मीद थी, वहां से उसे उतना नुकसान नहीं हुआ है। बीजेपी भले ही तमिलनाडु से बहुत उम्मीद कर रही थी, लेकिन वहां भी उसे 2014 की तरह महज एक सीट पर ही जीत मिलती नजर आ रही है। पार्टी को महाराष्ट्र में भी बड़ा नुकसान हुआ है। पिछली बार पार्टी के यहां से 22 सांसद जीते थे, लेकिन इस बार उसकी सीटें आधी रह गई हैं। एनसीपी से अलग होकर बीजेपी का साथ देने वाले अजित पवार को महज एक ही सीटें मिलती नजर आ रही हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि बीजेपी को उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, बिहार और हरियाणा से बड़ा झटका लगा है। हालांकि पार्टी को सबसे ज्यादा समर्थन मध्य प्रदेश से मिला है। गुजरात में भी उसका गढ़ बचा हुआ है। असम, अरुणाचल प्रदेश, उत्तराखंड और हिमाचल में भी उसका जादू चल रहा है।

सवाल यह है कि आखिर बीजेपी उत्तर प्रदेश में क्यों कमजोर हो गई? फौरी तौर पर देखें तो सबसे बड़ा कारण यहां के युवाओं के गुस्से को बड़ा कारण माना जा रहा है। राज्य में बार-बार परीक्षाओं के पेपर आउट होते रहे। इससे युवाओं में गुस्सा रहा। इसकी वजह से उनकी नौकरियां लगातार दूर जाती रहीं। अग्निवीर योजना को लेकर विपक्षी दलों विशेषकर कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा नेता अखिलेश यादव ने जिस तरह मुद्दा बनाया, उसने युवाओं में बीजेपी के खिलाफ गुस्सा भर दिया। राममंदिर के निर्माण के बाद समूचा देश जिस तरह राममय हुआ था, उससे बीजेपी को उम्मीद थी कि पार्टी को रामभक्तों का बहुत साथ मिलेगा, लेकिन उत्तर प्रदेश में ही राम की लहर नहीं चल पाई। उत्तर प्रदेश में बीजेपी

की मौजूदा हालत के चलते 1999 का आम चुनाव याद आ रहा है। तब उत्तराखंड भी उत्तर प्रदेश का हिस्सा था, इस लिहाज से उत्तर प्रदेश में लोकसभा की 85 सीटें थीं। 1998 के आम चुनावों में बीजेपी को राज्य से 52 सीटें मिली थीं, लेकिन बाद में कल्याण सिंह ने बागी रुख अपना लिया तो अगले ही साल हुए आम चुनावों में बीजेपी की 23 सीटें घट गईं। कुछ ऐसी ही स्थिति इस बार बीजेपी की उत्तर प्रदेश में होती दिख रही है। पार्टी अपना आकलन तो करेगी, लेकिन मोटे तौर पर माना जा रहा है कि बीजेपी को राज्य में सबसे ज्यादा नुकसान युवाओं के गुस्से, राज्य सरकार के स्थानीय स्तर पर भ्रष्टाचार ना रोक पाने और गलत उम्मीदवार देने की वजह से हुआ। उदाहरण के लिए बलिया से नीरज शेखर की उम्मीदवारी पर पार्टी के ही लोगों को सबसे ज्यादा एतराज रहा। खुद प्रधानमंत्री मोदी भी डाक मतमत्रों में छह हजार से ज्यादा वोटों से पीछे चलते रहे, इसका मतलब साफ है कि बीजेपी को लेकर राज्य में एक तरह से गुस्सा था, जिसे भांपने में पार्टी नाकाम रही।

बिहार के बारे में माना जा रहा था कि नीतीश को नुकसान होगा, लेकिन इसके ठीक उलट नीतीश अपनी ताकत बचाए रखने में कामयाब हुए हैं। राज्य में अब जनता दल सबसे बड़ा संसदीय दल है। तो क्या यह मान लिया जाए कि 2020 के विधानसभा चुनावों में कमजोर किए जाने की कथित कोशिश को पलट दिया है?
पार्टी को महाराष्ट्र में शायद अजित पवार को साथ लाना उसके वोटरों को पसंद नहीं आया। बीजेपी ही उन्हें राज्य की सिंचाई घोटाले का आरोपी मानती रही और उन्हें ही उपमुख्यमंत्री बनाकर ले आई। जब कोई विपक्षी व्यक्ति पार्टी या गठबंधन में लाया जाता है तो सबसे ज्यादा जमीनी कार्यकर्ता को परेशानी होती है। वह पसोपेश में पड़ जाता है कि कल तक वह अपनी पार्टी लाइन के लिहाज से जिसका विरोध करता रहा, उसका अब कैसे समर्थन करेगा। महाराष्ट्र का कार्यकर्ता इसीलिए निराश रहा, जिसका असर चुनावी नतीजों पर दिख रहा है। हरियाणा के प्रभुत्वशाली जाट मतदाताओं को सबसे ज्यादा गुस्सा अग्निवीर और शासन में उसकी घटती भागीदारी को लेकर रहा। इसकी वजह से यहां का अधिसंख्य मतदाता पार्टी से रुष्ट हुआ और नतीजा सामने है। राजस्थान में बीजेपी का कार्यकर्ता ही मुख्यमंत्री भजनलाल को स्वीकार नहीं कर पा रहा है। पार्टी की दिग्गज नेता वसुंधरा को किनारे लगाया जाना भी बीजेपी की अंदरूनी राजनीति पर असर डाला। इसका असर है कि पार्टी राज्य में अपेक्षित प्रदर्शन नहीं कर पाई। पश्चिम बंगाल में ममता अपने किले को बचाने में कामयाब रहीं। हालांकि उड़ीसा में पार्टी का जबरदस्त प्रदर्शन रहा। जहां राज्य सरकार के साथ ही संसद की ज्यादातर सीटों पर वह काबिज हो चुकी है।

इस चुनाव ने यह भी संदेश दिया है कि गठबंधन की राजनीति खत्म नहीं हुई। दो कार्यकाल में अपने दम पर बहुमत हासिल करने के चलते मोदी-शाह की जोड़ी लगातार अपने एजेंडे को लागू करती रही, लेकिन अब गठबंधन की सरकार होगी, इसलिए अब इस जोड़ी को पहले के दो कार्यकाल की तरह काम करना आसान नहीं होगा। एक धारणा यह भी बन गई थी कि जिस संगठन के चलते बीजेपी की पहचान थी, वह धीरे-धीरे किनारे होता चला गया, लेकिन बहुमत ना हासिल होने की स्थिति में अब संगठन की अहमियत बढ़ेगी। इस चुनाव का संदेश यह भी है कि संगठन को जमीनी लोगों पर भरोसा करना होगा। बीजेपी के लिए राहत की बात यह है कि तीसरी बार वह सत्ता पर काबिज होगी। उसने उन राज्यों में भी अपनी उपस्थिति बनाने में कामयाबी हासिल की है, जहां वह नहीं थी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

पर्यावरण दिवस
रोहित कौशिक

समझना होगा पर्यावरण का महत्व

इस दौर में हमारा ज्ञान लगातार बढ़ रहा है। समाज में प्रगतिशीलता भी बढ़ रही है, लेकिन पर्यावरण की वर्तमान स्थिति को देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि पर्यावरण के मामले में हमारी समझ बढ़ी है। पर्यावरण की सेहत लगातार बिगड़ती जा रही है। हाल ही में आस्ट्रेलिया के मोनाश विश्वविद्यालय में हुए एक अध्ययन में बताया गया है कि लू से जुड़ी मौतें गर्मी से मरने वालों की कुल संख्या का लगभग एक तिहाई और विश्वभर में हुई कुल मौतों का एक फीसद है। पिछले तीस वर्षों के आंकड़ों के आधार पर यह बताया गया है कि हर वर्ष गर्मी में एक लाख तिरपन हजार अतिरिक्त लोगों की जान चली जाती है, जिसमें से लगभग आधी मौतें एशिया में और तीस फीसद से ज्यादा यूरोप में होती है। भारत में हर साल तीस हजार से ज्यादा लोगों की लू के कारण मृत्यु हो जाती है। धरती का तापमान बढ़ रहा है। इसके साथ ही मौसम का चक्र भी अनियमित हो गया है। कुछ समय पहले 'असेसमेंट ऑफ क्लाइमेट चेंज ओवर द इंडियन रीजन' नामक रिपोर्ट में भी बताया गया था कि अगर जलवायु परिवर्तन को रोकने के लिए बड़े कदम नहीं उठाए गए तो लू के थपेड़ों में तीन से चार गुना बढ़ोतरी दिखाई देगी और समुद्र का जलस्तर 30 सेंटीमीटर तक उठ सकता है। शोधकर्ताओं का कहना है कि इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं कि इस बदलाव को मानव गतिविधियों ने प्रभावित किया है। पिछले दिनों हम सबने यह महसूस किया कि लॉकडाउन के दौरान वायु और जल प्रदूषण कम हुआ। इस दौर में हमें यह समझना होगा कि पर्यावरण को सम्मान देकर ही हम पृथ्वी की रक्षा कर पाएंगे। पिछले दिनों इंटरनेशनल यूनियन फॉर द कंजर्वेशन ऑफ नेचर द्वारा जारी रिपोर्ट में बताया गया था कि जलवायु परिवर्तन के कारण महिलाओं और लड़कियों के प्रति होने वाली हिंसा में इजाफा हुआ है। रिपोर्ट के अनुसार गरीब देशों में जलवायु परिवर्तन को रोकने में सरकारें विफल रही हैं। इसके कारण संसाधन बर्बाद हो रहे हैं। जलवायु परिवर्तन से जूझ रहे इलाकों में संसाधनों पर काबिज होने के लिए वर्ग संघर्ष जारी है। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि इस दौर में कई तौर-तरीकों से समाज पर जलवायु परिवर्तन का असर पड़ रहा है। पर्यावरण बचाने के लिए जमीन पर काम नहीं हो रहा है। यह सब इसलिए हो रहा है कि हम अभी तक भी प्रकृति का महत्व नहीं समझ पाए हैं। प्रकृति हमें एक नया सौन्दर्यबोध प्रदान करती है। धरती को सौन्दर्य प्रदान करने में प्रकृति ने अतुलनीय योगदान दिया है। पेड़-पौधे, फूल-पत्तियां, झरने और पहाड़ धरती के आभूषण ही हैं। कल्पना कीजिए कि इन आभूषणों से रहित धरती हमें कैसी दिखाई देगी। यह हम सबका कर्तव्य है कि हम धरती के इन आभूषणों की चमक फीकी न पड़ने दें। हमें यह समझना होगा कि यह धरती सुन्दर रहेगी तो हमारा जीवन भी सुन्दर रहेगा। कभी हम प्रकृति के विभिन्न अवयवों का क्षरण कर प्रदूषण बढ़ाते हैं तो कभी जलवायु परिवर्तन के लिए स्वयं जिम्मेदार होते हुए भी प्रकृति को कोसते हैं। हालांकि प्राचीन समय में हमने प्रकृति से कई रिश्ते जोड़े। तभी तो हम आज तक धरती को धरती माता, सांप को नाग देवता, गंगा को गंगा मैया, चांद को चंदा मामा कह रहे हैं। क्यों न हम इस दौर में इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए प्रकृति से प्यार का एक नया रिश्ता जोड़ें। इस दौर में हम कई स्तरों पर मानसिक तनाव से जूझ रहे हैं। प्रकृति मानसिक तनाव दूर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। यह दुःखद ही है कि प्रकृति जो शान्ति हमें प्रदान करना चाहती है, हम अपने व्यवहार से उस की शान्ति को भंग कर देना चाहते हैं। प्रकृति का स्नेहिल और शीतल स्पर्श हमें अवसाद के गहन अन्धकार से बाहर निकालने में सहायता प्रदान करता है। दरअसल हमने आज तक पर्यावरण का ध्यान इसलिए नहीं रखा क्योंकि हम प्रकृति से प्यार का रिश्ता नहीं जोड़ पाए। इस दौर में हमें पर्यावरण का महत्व समझना होगा। पर्यावरण का महत्व समझकर ही हम इस पृथ्वी के ताप को कम कर सकते हैं।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः

संकलित
दर्शन

गीताकार ने कहा है कि श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः अर्थात जिसकी जैसी श्रद्धा होती है, वह स्वयं ही वही यानी उसी के अनुरूप बन जाता है। शिष्य और गुरु के मध्य जो श्रद्धा के सूत्रों का सशक्त बंधन होता है, वही लक्ष्य तक पहुंचाने और अध्यात्म की समस्त विभूतियां प्राप्त कराने में प्रमुख भूमिका निभाता है। जिस श्रद्धा के सहारे मीरा ने गिरधर गोपाल को साथ रहने के लिए विवश किया, एकलव्य ने द्रोणाचार्य की मिट्टी से बनी प्रतिमा को असली द्रोण से भी अधिक समर्थ बनाया और रामकृष्ण परमहंस ने पत्थर की प्रतिमा को जीवंत काली जैसा भोग ग्रहण करने के लिए सहमत कर लिया था, वह श्रद्धा तत्व ही आत्मिक प्रगति का आधारभूत है। इसे उपार्जित करने के लिए जीवंत गुरु का आश्रय लेना पड़ता है। जीवन के प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य के लिए सद्गुरु के अवलंबन की आवश्यकता पड़ती है। आत्मिक प्रगति के लिए सद्गुरु का आश्रय लिए जाने की बात प्राचीन आर्ष ग्रंथों से लेकर ऋषि-मुनियों तक ने कही है। आत्मिक प्रगति, भिन्न स्तर का सोच अपनाने और तदनुरूप अपने क्रियाकलापों को ढालने के लिए सशक्त अवलंबन की आवश्यकता पड़ती है। यह कार्य समर्थ आदर्शवादी और श्रेष्ठ स्तर के व्यक्तित्वों के साथ घनिष्ठता स्थापित करने पर ही बनता है। इसी व्यवस्था को गुरुवरण कहते हैं। गुरु के रूप में एक ऐसी सत्ता के प्रति संपूर्ण समर्पण, जो उत्कृष्टताओं और सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय हो।

मन को कभी भी निराश न होने दें

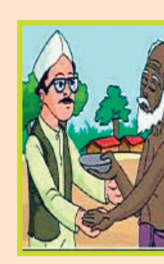

संकलित
प्रेरणा

सुबह होते ही, एक भिखारी सेठजी के घर पर भिक्षा मांगने के लिए पहुंच गया। भिखारी ने दरवाजा खटखटाया, सेठजी बाहर आए पर उनकी जेब में देने के लिए कुछ न निकला। वे कुछ दुखी होकर घर के अंदर गए और एक बर्तन उठाकर भिखारी को दे दिया। भिखारी के जाने के थोड़ी देर बाद ही वहां सेठजी की पत्नी आई और बर्तन न पाकर चिल्लाने लगीः अरे! क्या कर दिया आपने चांदी का बर्तन भिखारी को दे दिया। दौड़ो-दौड़ो और उसे वापिस लेकर आओ। सेठजी दौड़ते हुए गए और भिखारी को रोक कर कहाः भाई मेरी पत्नी ने मुझे जानकारी दी है कि यह गिलास चांदी का है, कृपया इसे सस्ते में मत बेच दीजिएगा। वही पर खड़े सेठजी के एक मित्र ने उससे पूछाः मित्र! जब आपको पता चल गया था कि ये गिलास चांदी का है तो भी उसे गिलास क्यों ले जाने दिया? सेठजी ने मुस्कुराते हुए कहाः मन को इस बात का अभ्यस्त बनाने के लिए कि वह बड़ी से बड़ी हानि में भी कभी दुखी और निराश न हो! मन को कभी भी निराश न होने दें, बड़ी से बड़ी हानि में भी प्रसन्न रहें। मन उदास हो गया तो आपके कार्य करने की गति धीमी हो जाएगी। इसलिए मन को हमेशा प्रसन्न रखने का प्रयास। इसी लिए कहां गया है, मन प्रसन्न तो आप प्रसन्न। प्रसन्न मन हमारे शरीर पर काफी प्रभाव डालता है। प्रसन्न मन से किए गए कार्य में सफलता की संभावना अधिक होती है।

जीत पर जश्न

पश्चिम बंगाल की बीरभूम जिले में मंगलवार को लोकसभा चुनाव की मतगणना के दौरान पार्टी की बढ़त पर जश्न मनाते टीएमसी समर्थक।

आज की पाती

गहराता जाएगा पानी का संकट

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र रायपुर एक तो गर्मी से परेशान, ऊपर से यहां पानी का संकट और इस पानी के संकट पर राजनीति से परेशानी। रायपुर में आबादी बढ़ती जा रही है। दूसरे राज्यों के बहुत से तादाद में लोग रोजी-रोटी के लिए यहां आते हैं। इसलिए यहां पानी का संकट और भी ज्यादा पैदा हो सकता है भविष्य में। अब तो रायपुर में पानी के प्राकृतिक संसाधनों का निर्माण भी नहीं किया जा सकता है, क्योंकि यहां रिहायशी इलाकों में भी बढ़ोतरी हो रही है। रायपुर के साथ जो भी नदी है, वो भी आखिर कब तक यहां की प्यास बुझाएगी? गर्मियों में तो नदियां भी लगभग सूख रही हैं। इनमें पानी कम हो जाता है। यही नहीं, छत्तीसगढ़ और अन्य इलाके भी पानी के संकट से परेशान हो जाते हैं।

-सुकेश पाठक, रायपुर

ट्रेंड

गाजा में अपहृतों से मिला

आज मैं गाजा में हमास द्वारा अपहृत और बंधक बनाए गए लोगों के परिवारों के साथ-साथ एक पूर्व बंधक से भी मिला। मैं उनकी दु:खद गवाही से बहुत प्रभावित हुआ। मैं उनका दर्द और दु:ख साझा करता हूं। मैं सभी बंधकों की तत्काल और रिहाई के लिए अपना आह्वान दोहराता हूं।

-एंटोनियो गुतरेस, यूएन महासचिव

इस्तीफा दे देना चाहिए

प्रधानमंत्री मोदी में अब जरा सी भी नैतिकता बची है तो उन्हें पीएम पद से इस्तीफा दे देना चाहिए। उन्होंने 400 पार का नारा दिया था लेकिन देश की जनता समझ गई कि इन्हें 400 पार संविधान बदलने और आरक्षण ख़त्म करने के लिए चाहिए था।

-संजय सिंह, आप नेता

बाजार कहीं अधिक सटीक

चुनाव परिणाम: डेटा एनालिटिक्स, एआई, वैज्ञानिक अनुसंधान का उपयोग करने वाले सर्वेक्षणकर्ताओं की तुलना में सट्टा बाजार कहीं अधिक सटीक है। उन लोगों पर विश्वास करें जो अपनी भविष्यवाणियों के पीछे अपना पैसा लगाते हैं।

-हर्ष गोयनका, उद्योगपति

कंगना टीम को बधाई

कंगना टीम को बड़ी जीत पर बधाई! आप एक रॉकस्टार हैं। आपके और मंडी तथा हिमाचल प्रदेश के लोगों के लिए बहुत खुशी की बात है। आपने साबित किया है कि अगर कोई केंद्रित हो और कड़ी मेहनत करे तो "कुछ भी हो सकता है"! जय हो!

-अनुपम खेर, अभिनेता

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से **hbcgpati@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

करंट अफेयर

पांच दिन की चीन यात्रा पर रवाना पाक पीएम शहबाज

पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ मंगलवार को चीन की पांच दिवसीय सरकारी यात्रा पर रवाना हुए, जिसका मकसद द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाना और अरबों डॉलर के चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (सीपीईसी) के तहत सहयोग बढ़ाना है। शरीफ चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग के निमंत्रण पर चार से आठ जून तक चीन की यात्रा पर रहेंगे। 'जियो न्यूज' की खबर के अनुसार पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के नेता शरीफ (72) मार्च में पार्टी के नेतृत्व वाली गठबंधन सरकार बनने पर दूसरी बार प्रधानमंत्री पद पर आसीन होने के बाद पहली विदेश यात्रा पर चीन रवाना हुए हैं। चीनी विदेश मंत्रालय की प्रवक्ता माओ निंग ने पिछले सप्ताह बीजिंग में कहा था कि अपनी यात्रा के दौरान शरीफ चीनी राष्ट्रपति शी के साथ वार्ता करेंगे और चीन-पाकिस्तान संबंधों के विकास के लिए 'संयुक्त रूप से एक खाका तैयार करेंगे।' सोमवार को पाकिस्तान में चीनी राजदूत जियांग जेदोंग ने कहा कि दोनों नेताओं के मार्गदर्शन और दोनों देशों की जनता के मजबूत समर्थन से शरीफ की चीन यात्रा पूरी तरह सफल होगी और चीन-पाकिस्तान संबंधों के विकास में मील का पत्थर बनेगी।

ऑफ बीट

माइंडफुलनेस से अपेक्षित लाभ क्यों नहीं मिल रहे

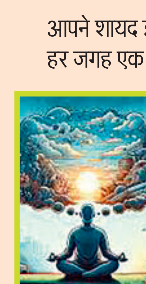

आपने शायद इन दिनों समाचारों से लेकर पत्रिकाओं और सोशल मीडिया तक, हर जगह एक शब्द देखा होगा : माइंडफुलनेस। माइंडफुलनेस को कभी-कभी मानसिक स्वास्थ्य उपचार के रूप में देखा जाता है, और अध्ययनों से पता चलता है कि माइंडफुलनेस-आधारित उपचार मानसिक स्वास्थ्य का समर्थन करते हैं। आपके दोस्तों या परिवार ने भी आपको बताया होगा कि माइंडफुलनेस ने उनका जीवन बदल दिया है। लेकिन अगर आपने माइंडफुलनेस की कोशिश की है और महसूस करते हैं कि यह आपके लिए काम नहीं कर रहा है, तो हमारा विकासात्मक मनोविज्ञान अनुसंधान इसका कारण बता सकता है। हमारे हालिया अध्ययन में, हमने पाया है कि दिमागी तौर पर बहुत अधिक सक्रिय रहना भी शायद सभी के लिए फायदेमंद नहीं होता है। इसके बजाय, एक खास उम्र में माइंडफुलनेस के कुछ पहलू दूसरों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो सकते हैं, जो मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को अलग तरह से प्रभावित करते हैं। माइंडफुलनेस के विभिन्न पहलू? मनोविज्ञान अनुसंधान से पता चला है कि कुछ दिमागी पहलू दूसरों की तुलना में मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण का अधिक समर्थन कर सकते हैं।

फिर बागडोर मोदी के हाथों में

इस बार के लोकसभा चुनाव के नतीजे बीजेपी और एनडीए के लिए चिंता का सबब बन गए है। 10 साल भारत सरकार की बागडोर संभालने के बाद आत्मविश्वास से लबरेज भाजपा ने इस बार 400 पार का नारा दिया था और पूरी दुनिया में बीजेपी के समर्थकों ने इस 400 पार के नारे को इतना प्रचारित किया कि खुद बीजेपी भी विश्वास नहीं कर पाई कि उसे इन चुनावों में कोई टक्कर दे सकता है। लेकिन अब नतीजा देश और दुनिया के सामने है। जिसमें साफ-साफ दिख रहा है कि 400 पार का नारा लगाने वाली बीजेपी कैसे 300 से भी नीचे आ गई।

स्थिर सरकार से दुनिया में बढ़ेगी भारत की ताकत

आने वाले पांच साल कई मुद्दों पर होंगे अहम

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में लोकसभा चुनाव प्रक्रिया और मंगलवार को आए परिणाम पर पूरे विश्व की नजर रही। माना गया कि चुनाव बाद एक बार फिर स्थिर सरकार के नेतृत्व में लोकतांत्रिक भारत की दुनिया में ताकत बढ़ेगी। विश्व की पांचवी अर्थव्यवस्था, बढ़ती सामरिक व कूटनीतिक ताकत तथा ग्लोबल साउथ के देशों का नेतृत्व कर रहे भारत में अगले पांच साल के लिए चुनी जाने वाली सरकार से आगे की दिशा तय होगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 3.0 वाली वापसी वाली सरकार को अंतरराष्ट्रीय पटल पर लोकतांत्रिक भारत की बढ़ती ताकत से जोड़कर देखा जा रहा है। विश्लेषणों में यह भी कहा गया है कि दुनिया में चल रहे संघर्षों, बदलती विश्व व्यवस्था, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में प्रतिनिधित्व बढ़ाने और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर आने वाले पांच साल अहम होंगे। इस दौरान भारत में स्थिर और मजबूत सरकार इन सुधारों में प्रमुख भूमिका निभाएगी।

दुनिया बोली लोगों ने दिखाया विश्वास, मोदी ने रचा इतिहास

द गार्जियन बोला- संबंधों में और होगा सुधार

ब्रिटिश अखबार द गार्जियन की वेबसाइट की रिपोर्ट ने लिखा है कि पीएम नरेंद्र मोदी की जीत से संबंधों में सुधार होगा। उन्होंने भारत के धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र में बदलाव किया है। साइट ने हालांकि यह भी कहा है कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने नेतृत्व में हो रहे इस तीसरे चुनाव में जबरदस्त जीत के दावे कर रहे थे लेकिन रिजल्ट से पता चलता है कि उन्होंने वो शानदार जीत हासिल नहीं की है जिसकी कई लोगों ने भविष्यवाणी की थी। 640 मिलियन वोटों में से आधे की गिनती के साथ बीजेपी ने अपने सहयोगियों के साथ सिर्फ 290 सीटें जीतीं, हालांकि ये नंबर उसके बहुमत के पार है तो वो अब सरकार बनाएगी।

अलजजीरा ने कहा- पीठ नहीं थपथपा सकते मोदी

इसके अलावा मिडिल ईस्ट की दिग्गज मीडिया 'अलजजीरा' ने इन चुनावों के रुझानों पर अपनी राय रखी है और लिखा है कि अगर भाजपा अपने दम पर बहुमत हासिल नहीं कर पाती है, तो वो अपने सहयोगियों की सद्भावना पर बहुत ज्यादा निर्भर हो सकती है क्योंकि यही उन्हें सियासत का एक अहम खिलाड़ी बनाती है। जिनसे उम्मीद लगाई जाती है कि वो नीति निर्माण के साथ-साथ नीति निर्धारण के मामले में भी अपना भारी भरकम योगदान देंगे। 2014 में सत्ता में आने के बाद से पीएम मोदी की भाजपा ने गठबंधन सरकार में शासन किया है, लेकिन उसके पास हमेशा अपने दम पर बहुमत रहा है।

पाक साइट डान ने कहा भारी जीत नहीं मिली

पाकिस्तानी वेबसाइट डॉन में लोकसभा चुनाव को लेकर एक आर्टिकल छपा है। डॉन ने लिखा है- भारत में चुनाव की मतगणना से पता चलता है कि मोदी गठबंधन बहुमत की ओर बढ़ रहा है, लेकिन भारी जीत नहीं मिली है। अखबार ने आगे लिखा, 'टीवी चैनलों के अनुसार, मंगलवार को शुरुआती मतगणना में एनडीए बहुमत हासिल कर रहा है, लेकिन एग्जिट पोल के मुकाबले जीत उतनी पड़ी नहीं है।बीबीसी इंग्लिश ने कहा है कि भारत में चुनाव नतीजों में भाजपा की बड़ी जीत की उम्मीदों को झटका। निक्की एशिया कहता है कि नरेंद्र मोदी बहुमत से सरकार बना रहे हैं।

न्यूयॉर्क टाइम्स ने लिखा- छोटी पार्टियों के सहारे जीती है बीजेपी

लोकसभा चुनावों के नतीजों और एनडीए के इस प्रदर्शन पर विदेशी मीडिया ने भी टिप्पणी की है। न्यूयॉर्क टाइम्स ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि भारत के चुनावी नतीजे काफी चौंकाने वाले रहे हैं। उन्होंने संसद में उतनी सीट नहीं जीती जितनी वो आशा जता रहे थे। इसका मतलब ये हुआ कि अब उन्हें छोटी पार्टियों के सहारे संसद में जाना होगा और उन्हीं के सहारे सरकार चलाने को मजबूर होना होगा। 2014 से ये पहली बार है कि भारत के सबसे ताकतवर नेता अपने दम पर तीसरी बार के चुनाव में अपनी पार्टी को मेजोरिटी पर नहीं ला पाए।

चीनी अखबार ग्लोबल टाइम्स ने कहा दोनों देशों के संबंध सुधरेंगे

चीन के अखबार ग्लोबल टाइम्स ने कहा है कि मोदी सरकार बनने से दोनों देशों के बीच जो कुछ मतभेद है वह दूर होंगे और खुला संवाद बना रहेगा। अमेरिकी अखबार वॉशिंगटन पोस्ट ने लिखा है कि मोदी तीसरी बार सत्ता में आ रहे है। जनवरी में उन्होंने राम मंदिर का उद्घाटन कर अपनी पार्टी की हिंदू राष्ट्रवादी प्रतिज्ञा को पूरा किया। पीएम मोदी यदि तीसरी बार जीतकर यह उलब्धि हासिल करने वाले भारत के दूसरे नेता बन गए हैं।

दुनिया के लिए इसलिए अहम भारत

1 दुनिया का सबसे बड़ा बाजार

एक अरब चालीस करोड़ की आबादी वाला भारत दुनिया का सबसे बड़ा और विशाल संभावनाओं वाला बाजार है।

2 विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र

भारत में 97 करोड़ पंजीकृत मतदाता हैं, जो कि दुनिया के किसी भी देश से ज्यादा हैं।

3 प्रवासियों का सबसे बड़ा समूह

दुनिया भर के देशों में भारत के 1 करोड़ 80 लाख से ज्यादा प्रवासी हैं, जो कि भारत की सॉफ्ट पॉवर का विस्तार करते हैं।

4 ग्लोबल साउथ की प्रमुख आवाज

पीएम मोदी के नेतृत्व में भारत में ग्लोबल साउथ की बड़ी आवाज बनकर उभरा है और हर देश इसके साथ साझीदारी करना चाहता है।

नरेंद्र मोदी का दबदबा तो दिखा लेकिन...

भारत में हुए लोकसभा चुनाव के नतीजों का मंगलवार को ऐलान किया गया। केंद्र में एक बार फिर एनडीए की सरकार बनने जा रही है लेकिन भाजपा की सीटें घंटी हैं। इस पर इंटरनेशनल मीडिया ने भी अपनी प्रतिक्रिया दी है। बीबीसी न्यूज ने कहा है कि नतीजों में मोदी की बड़ी चुनावी जीत की उम्मीदें धूमिल हुई हैं। यूके से स्काईन्यूज ने कहा कि बीजेपी का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा है। सीएनएन ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि दुनिया की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी में सत्ताधारी भाजपा की निगाहें तीसरी बार सरकार बनाने पर है।

चुनाव को प्रभावित करने की भी हुई कोशिशें

विश्लेषकों का मानना है कि मोदी राज में भारत का जिस तरह से उभार हुआ है उसे चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग एशिया में चीन के वर्चस्व की राह में सबसे बड़ी बाधा मान रहे हैं। वहीं, ओपनएआइ ने दावा किया एक इजरायली फर्म भारत और मोदी विरोधी कंटेंट का प्रसार करने में लगी हुई थी। दो सबसे बड़े अभिनेता के डीपफेक वीडियो भाजपा के विरोध और विपक्ष का समर्थन करने में जुटे हुए थे। इनके एजेंडे में भारत विरोध और मोदी विरोध में कोई अंतर नहीं रह गया।

लोकतंत्र कमजोर होने का नैरेटिव किया खड़ा

इतना ही नहीं, जानकारों का कहना है कि सात दशकों से भारत जैसे विशाल बहुभाषी, बहुसांस्कृतिक व बहुधर्मी देश में लोकतंत्र का निर्बाध और सफल विस्तार पश्चिम के उदारवादी देशों को रास नहीं आ रहा। इन देशों द्वारा बार-बार इस एजेंडा को आगे बढ़ाया गया कि भारत में लोकतंत्र कमजोर हो रहा है, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सीमित हो रही है। ऐसे देश भारत में लोकतंत्र की सफलता को पचा नहीं पाते और इसके खिलाफ नरेटिव खड़ा करने के लिए डेमोक्रेसी इंडेक्स और प्रेस फ्रीडम इंडेक्स में लगातार भारत को निचली रैंक दी जाती है।

आंध्रा में भाजपा को बढ़त

लोकसभा चुनाव के परिणामों में दक्षिणी राज्यों में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने दो दक्षिणी राज्यों आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में बढ़त बनाई, जबकि तमिलनाडु में द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (डीएमके) और केरल में कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन ने एक बार फिर शानदार प्रदर्शन किया। केरल में बीजेपी की एक या दो सीटों पर बढ़त जरूर रही लेकिन इसके बावजूद कांग्रेस ने यहां बेहतर प्रदर्शन किया और इंडिया गठबंधन ने भी। खासकर केरल और तमिलनाडु में कांग्रेस गठबंधन काफी आगे रहे। कर्नाटक में कांग्रेस पिछली बार से ज्यादा सीटें जीतने की ओर अग्रसर रही। ध्यान रहे कि दक्षिण में सबसे बड़ा राज्य तमिलनाडु है, जिसमें लोकसभा 39 सीटें हैं। इसके अलावा, कर्नाटक में 28, आंध्र प्रदेश में 25, केरल में 20 और तेलंगाना में कुल 17 सीटें हैं। इन सभी सीटों पर अलग-अलग चरणों में मतदान हुए थे।

दक्षिणी राज्य- तमिलनाडु और केरल में कांग्रेस की शानदार जीत

राज्य	कुल सीट	भाजपा प्लस	कांग्रेस प्लस	अन्य
आंध्रप्रदेश	25	21	0	4
तेलंगाना	17	8	8	1
कर्नाटका	28	18	10	0
केरल	20	1	18	1
तमिलनाडू	39	1	38	0

कितने सीटों पर कौन

कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूडीएफ में कांग्रेस, इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग , रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी और केरल कांग्रेस हैं। गठबंधन से केरल की 20 सीटों में कांग्रेस ने 16 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। वहीं आईयूएमएल ने 2, आरएसपी ने 1, और केरल कांग्रेस ने भी 1 सीट पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। इसी तरह एलडीएफ की तरफ से कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ने 15 सीटों पर, कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इंडिया ने 4 सीटों पर और केरल कांग्रेस (एम) ने एक सीट पर अपने उम्मीदवार उतारे थे। एनडीए गठबंधन की तरफ से बीजेपी ने 20 में से 16 सीटों पर और भारत धर्म जन सेना ने 4 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे थे।

दक्षिण के बड़े चेहरे जिन्होंने मारी बाजी

शिवमोगा से भाजपा बीवाई राघवेंद्र 2 लाख 43 हजार वोटो से जीते

श्रीपेरूम्बुदूर डीएमके पार्टी के प्रत्याशी टीआर. बालू 2 लाख 90 हजार से जीते

हैदराबाद से असदुद्दीन ओवैसी ने साढ़े तीन लाख वोटो से जीत दर्ज की

बेंगलुरू रूरल से भाजपा के डॉ. मंजूनाथ जीते एचडी देवगौड़ा के दामाद है

तमिलनाडू तिरुवल्लूर में शशिकांत सेंथिल की जीत हासिल की है

केरल की बात करें तो 20 संसदीय सीटों पर 70.21 फीसदी वोट पड़े जबकि 2019 में 80 फीसदी से अधिक वोट डाले गए थे। राज्य की वायनाड लोकसभा सीट पर 72.52% वोट डाले गए। 2019 के लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी ने कुल 7,06,367 वोट हासिल कर ऐतिहासिक जीत हासिल दर्ज की थी। अगर वोट शेयर की बात करें तो उनका शेयर 64.94% था. इसके विपरीत, दूसरे स्थान पर रहे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) के पी.पी.सुनीर ने 2,74,597 वोट हासिल किए थे। देशभर की 542 लोकसभा सीटों में से केरल की वायनाड सीट भी हाईप्रोफाइल में शामिल है। इस चुनाव में वायनाड सीट से राहुल गांधी का मुकाबला सीपीआई की एनी राजा और बीजेपी के के. सुरेंद्रन से था। राहुल गांधी तीन लाख 34 हजार 535 वोटों से जीते। राहुल को 6 लाख 371 वोट मिले तो सीपीआई की एनई राजा तो दो लाख 65 हजार वोट प्राप्त हुआ। बता दें कि वायनाड लोकसभा सीट पर मतदाताओं की कुल संख्या 13,59,679 है. इन मतदाताओं में अनुसूचित जाति तीन प्रतिशत, जबकि अनुसूचित जनजाति 9.5 प्रतिशत हैं, जबकि मुस्लिम 32 फीसदी और ईसाई 13 फीसदी हैं। आपको बता दें कि पिछले लोकसभा चुनाव यानि 2019 में कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने वायनाड सीट से रिकॉर्ड 4.31 लाख वोटों से जीत दर्ज की थी। वैसे भी वायनाड लोकसभा क्षेत्र में कांग्रेस का प्रदर्शन ऐतिहासिक रहा है। 2009 के आम चुनाव के बाद पार्टी ने चुनावी नजरिए से अपना दबदबा बनाए।

सबसे बड़ी जीत

2009 और 2014 में दिवंगत कांग्रेस नेता एम.आई.शनावास को निर्वाचन क्षेत्र से सांसद के रूप में चुना गया था। 2018 में उनके दुर्भाग्यपूर्ण निधन के बाद, राहुल गांधी ने इस सीट की कमान संभाली, जिससे इस क्षेत्र में कांग्रेस का प्रभाव और मजबूत हुआ था। इसके ठीक विपरीत, बीजेपी को वायनाड लोकसभा चुनाव में महत्वपूर्ण बढ़त बनाने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। 2014 और 2019 दोनों ही आम चुनाव में बीजेपी उम्मीदवारों ने चुनाव में जीत दर्ज नहीं की थी।

ये प्रत्याशी हारे....

प्रज्ज्वल रेवन्ना कर्नाटक की हासन लोकसभा सीट से 43738 वोटों से हारे

माधवी लता हैदराबाद लोकसभा सीट से 338335 लाख वोटों से हारी

तमिलिसाई सुंदरराजन दक्षिण चेन्नई सीट से 48784 वोटों से हार गई

के. अन्नामलाई तमिलनाडु की हॉट सीट से 51577 वोटों से हार गए

राजीव चंद्रशेखर तिरुवनंतपुरम लोकसभा सीट से 16077 वोटों से हारे।

दक्षिण में मिला-जुला परिणाम

लोकसभा चुनाव-2024 में भाजपा के लिए दक्षिण भारत से मिली-जुली खबर है। एक तरफ आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में भाजपा ने बढ़िया प्रदर्शन किया और केरल में भी एंट्री ले ली है, लेकिन कर्नाटक में उसे नुकसान हुआ है और तमिलनाडु का दरवाजा इस बार भी उसके लिए बंद ही रहा है। पीएम नरेंद्र मोदी और अन्नामलाई का जादू भी काम नहीं आया। केरल में भी भाजपा चीफ के. सुरेंद्रन भी वायनाड से राहुल गांधी के खिलाफ करीब 5 लाख वोटों से हारते नजर आ रहे हैं। कर्नाटक जो कभी भाजपा का गढ़ था, वहां सीटें बढ़ने के बजाय इस बार घट गईं। कर्नाटक में पहली बार भाजपा और जेडी एस ने अलायंस में लोकसभा चुनाव लड़ा। भाजपा को उम्मीद थी कि अलायंस के दम पर वो पूरी 28 सीटें जीतेगी, लेकिन सीटें बढ़ने के बजाय कम हो गईं। यहां भाजपा 26 से 18 सीट पर आ गई। केरल से जरूर पार्टी को खुशखबरी मिली है। यहां त्रिशूर सीट पर जीत दर्ज कर पार्टी ने पहली बार केरल में अपना खाता खोला है। केरल कई साल से लेफ्ट और कांग्रेस का गढ़ रहा है। भाजपा ने चुनिंदा सीटों पर फोकस किया और सोच-समझकर उम्मीदवार उतारे, जिसका पार्टी को फायदा मिला। तमिलनाडु में भाजपा ने डीएमके पर एंटी हिंदू-परिवारवाद के आरोप लगाए। पूर्व आईपीएस अफसर अन्नामलाई को चेहरा बनाया। पीएम ने बार-बार सभाएं कीं, फिर भी पार्टी खाता भी नहीं खोल सकी। हालांकि अलायंस में लड़ रही पार्टी पीएमके एक सीट पर जीत की ओर है।

तमिलनाडुः एंटी-हिंदू के आरोप नहीं चले, फंड न मिलने का मुद्दा असरदार

तमिलनाडु में न तो भाजपा के राष्ट्रीय मुद्दे जैसे- राम मंदिर, सीएए , यूनिफॉर्म सिविल कोड और आर्टिकल 370 का कोई इम्पैक्ट दिखा। न ही राज्य में भाजपा की बातों का लोगों पर असर हुआ। इसके उलट डीएमके ने चुनाव में जीएसटी और मिचौंग साइक्लोन में केंद्र से मदद न मिलने को बड़ा मुद्दा बनाया। इसका असर नतीजों में साफ नजर आ रहा है। इंडिया ब्लॉक ने यहां 39 में से 37 सीटें जीत लीं। सीएम एमके स्टालिन ने बार-बार कहा कि तमिलनाडु सरकार केंद्र को 1 रुपए भेजती है, तो केंद्र से 28 पैसे मिल रहे हैं। जीएसटी का बकाया नहीं दिया जा रहा। इससे राज्य का विकास रुका हुआ है, जबकि उत्तर प्रदेश को 1 रुपए के बदले केंद्र 2 रुपए जारी करता है। उन्होंने मिचौंग साइक्लोन का हर रैली में जिक्र किया। उन्होंने कहा केंद्र ने न तो आज तक मदद के लिए फंड दिया और न ही पीएम मोदी ने कभी प्रभावित इलाकों का दौरा किया। तमिलनाडु में यंग वोटर्स में नीट का एग्जाम भी बड़ा मुद्दा था। दरअसल, नीट आने से पहले तमिलनाडु में 12वीं बोर्ड के नंबरों के आधार पर मेडिकल सीट मिलती थी। नीट लागू होने के बाद ये बदल गया। यंग वोटर्स का आरोप है कि नीट का सिलेबस सीबीएसई आधारित है। स्टेट बोर्ड्स को अनदेखा किया जाता है। तमिलनाडु सरकार ने यहां तक कह दिया है कि तमिलनाडु के बच्चों के साथ भेदभाव के लिए ये लागू किया गया है।

कर्नाटकः कांग्रेस को स्कीम्स का फायदा भाजपा सिर्फ ब्रांड मोदी के भरोसे

कर्नाटक के वोटिंग पैटर्न को देखते हुए भाजपा नेता कयास लगा रहे थे कि विधानसभा चुनाव में कांग्रेस को बहुमत मिला था इसलिए लोकसभा चुनाव में भाजपा को वोट मिलेंगे, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। वहीं, चुनाव में भाजपा मोदी ब्रांड के ही भरोसे रही। कांग्रेस ने अपनी 5 गारंटी को प्रमोट किया, जो सरकार में आने के बाद उसने स्टेट में लागू की थीं। इसमें महिलाओं को दो हजार रुपए महीना देना और फ्री बस यात्रा शामिल है। इन स्कीम्स का असर दिख रहा है कि शून्य पर पहुंच चुकी कांग्रेस 7 सीटें जीत गई। कर्नाटक में क्लीन स्वीप के मकसद से उतरी भाजपा ने चुनाव में आधे से ज्यादा कैंडिडेट बदल दिए थे। इसका कई जगह विरोध हुआ। कई सीटों पर लोग हाईकमान के डर से चुप रहे, लेकिन अंदर ही अंदर इस बात को लेकर नाराजगी थी। अब इसका इम्पैक्ट नतीजों में भी दिख रहा है। कर्नाटक में भाजपा के पिछड़ने की एक बड़ी वजह ये भी रही कि यहां पार्टी के अंदर बाकी राज्यों जैसी एकजुटता नहीं नजर आई। पार्टी गुटबाजी के चलते अलग-अलग खेमों में बंटी दिखी।

केरलः पूरम फेस्टिवल पर हुई कंट्रोवर्सी का असर, क्रिश्चियन कम्युनिटी का साथ मिला

केरल में भाजपा का दो सीटों त्रिशूर और तिरुवनंतपुरम पर सबसे ज्यादा जोर था। इसमें से त्रिशूर सीट पर भाजपा को कामयाबी भी मिली। त्रिशूर से साउथ के फिल्मस्टार सुरेश गोपी को पार्टी ने दोबारा उतारा। 2019 में भी वो भाजपा के टिकट पर ही चुनाव लड़े थे, लेकिन हार गए थे। हार के बावजूद गोपी ने त्रिशूर से फोकस नहीं हटाया। गोपी ने 2016 से 2021 के बीच राज्यसभा सांसद के तौर पर मिलने वाले फंड्स को डेवलपमेंट में इस्तेमाल किया। त्रिशूर में बड़ी संख्या में क्रिश्चियन वोटर हैं। क्रिश्चियन को अपनी तरफ लाने में भी गोपी काफी हद तक सफल रहे। उन्होंने अपनी बेटी की शादी के मौके पर लॉर्ड्स मेट्रोपॉलिटन कैथेड्रल चर्च को एक गोल्डन क्राउन डोनेट किया था। कैंपेनिंग के दौरान वो क्रिश्चियन कम्युनिटी के लोगों के घरों के साथ चर्च में भी विजिट करते रहे। इन सबका नतीजा रहा कि उन्होंने केरल में भाजपा को पहली जीत दिलाई। त्रिशूर सीट जीतने के पीछे एक बड़ी वजह पूरम फेस्टिवल के दौरान हुई कंट्रोवर्सी भी रही। 20 अप्रैल को त्रिशूर में पूरम फेस्टिवल के दौरान पुलिस ने श्रद्धालुओं से धक्कामुक्की की और जूते पहनकर मंदिर में घुस गई। इसके वीडियो वायरल हुए। वोटिंग से सिर्फ 6 दिन पहले हुए इस बवाल ने त्रिशूर सीट के पुराने सियासी समीकरण हिला दिए।

तमिलनाडु में भाजपा का हिंदुत्व नहीं चला, अन्नामलाई भी फेल

इस बार भाजपा के पास तमिलनाडु में खोने के लिए कुछ नहीं था। पार्टी ने पूरी ताकत झोंक दी थी। अन्नामलाई को पार्टी का प्रेसिडेंट बनाया। खुद पीएम मोदी ने उनकी सीट पर कैंपेनिंग की। भाजपा को उम्मीद थी कि उनकी पॉपुलैरिटी और ब्रांड मोदी से भाजपा का वोट पर्सेंट 3 से बढ़कर 15 हो जाएगा, 4 से 5 सीटें भी आएंगीं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जानकारों के मुताबिक अगर एआईएडीएमके और भाजपा गठबंधन में चुनाव लड़ते तो शायद कुछ सीटें जीत भी सकते थे, लेकिन अलग-अलग होकर और कमजोर हो गए। वहीं, डीएमके-कांग्रेस अलायंस ने मिलकर चुनाव लड़ा। एमके स्टालिन ने पूरे कैंपेन को लीड किया। उनकी पॉपुलैरिटी का असर नजर आया और अलायंस ने शानदार परफॉर्म किया। साछ ही तमिलनाडु में पहले से ही राम के कई मंदिर हैं। नॉर्थ में काशी है तो यहां रामेश्वरम है। जयललिता ने भी एक वक्त पर राम मंदिर के लिए ईंट भेजकर समर्थन जुटाने की कोशिश की थी, लेकिन नुकसान ही हुआ। तब पार्टी ने इस मुद्दे से किनारा कर लिया था। जानकारों के अनुसार भाजपा का हिंदुत्व तमिलनाडु के लिए कोई मुद्दा नहीं है। इसकी यहां कोई अपील नहीं है। भाजपा के बड़े मुद्दे जैसे राम मंदिर, सीएए, यूनिफॉर्म सिविल कोड या आर्टिकल 370 हटाने का यहां कोई पॉजिटिव इम्पैक्ट नहीं है।' 'केंद्र से तमिलनाडु को फंड नहीं मिल रहा है।

मध्यप्रदेश में कांग्रेस 'शून्य', इंदौर में 'नोटा' को दो लाख से ज्यादा वोट

भोपाल। मध्य प्रदेश में लोकसभा चुनाव को मिली ऐतिहासिक जीत कई मायनों में अलग है। जहां सीएम डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में भाजपा ने क्लीन स्वीप करते हुए सभी 29 लोकसभा सीटों पर फतह कर ली है। इसके अलावा अब मध्य प्रदेश से कई दिग्गज नेता जो कि लाखों की संख्या में वोटों से जीतकर संसद में पहुंचने जा रहे हैं। ऐसे में मध्य प्रदेश के ये नेता केंद्रीय पटल पर अपनी चमक बिखेरने को तैयार दिख रहे हैं।

भाजपा का चला जादू जीतीं सभी 29 सीटें

ज्योतिरादित्य सिंधिया

गुना से भाजपा प्रत्याशी ज्योतिरादित्य सिंधिया ने करीब पौने 6 लाख वोटों के अंतर से कांग्रेस के प्रत्याशी राव यादवेंद्र सिंह को चित कर दिया है। इससे केंद्र में ज्योतिरादित्य सिंधिया का कद भी बढ़ेगा।

शिवराज सिंह

मध्य प्रदेश में दिसंबर 2023 के पहले तक करीब 15 साल तक मुख्यमंत्री रहे शिवराज सिंह चौहान ने रिकॉर्ड तोड़ वोटों से जीत दर्ज की है। वर्तमान में सीहोर जिले की बुधनी विधानसभा से विधायक शिवराज ने विदिशा लोकसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी रमाकांत भार्गव को करीब साढ़े 8 लाख वोटों से हराया है। यह शिवराज की बड़ी जीत है। माना जा रहा है कि विधानसभा और लोकसभा में उन्होंने बड़ी जीत दिलाई है। ऐसे में केंद्र में उन्हें बड़ी जिम्मेदारी मिलेगी।

शंकर लालवानी

इंदौर के शंकर लालवानी सबसे बड़ी जीत दर्ज करने वाले सांसद बन गए हैं। उन्होंने बसपा के संजय सोलंकी को करीब साढ़े 12 लाख मतों के अंतर से हराया है। बता दें कि यहां से कांग्रेस प्रत्याशी ने ऐन मौके पर फॉर्म वापस ले लिया था।

विष्णुदत्त शर्मा

मध्य प्रदेश भजपा अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा यानि वीडी शर्मा ने खजुराहो में करीब साढ़े 5 लाख मतों के अंतर से जीत हासिल की है। यहां से कांग्रेस और सपा ने गठबंधन करके सपा को टिकट दिया था, जिसका फॉर्म रिजेक्ट हो गया था। उनके नेतृत्व में बीजेपी लगातार शानदार प्रदर्शन कर रही है। विधानसभा से लेकर लोकसभा चुनाव तक में पार्टी ने प्रचंड जीत हासिल की है। ऐसे में उनका ग्राफ भी बढ़ना तय है।

विवेक बंटी साहू

विवेक बंटी साहू मप्र की राजनीति में सबसे नया नाम है। बंटी के सिर पर वह ताज सजा है, जिसके लिए भाजपा 50 साल से इंतजार कर रही थी। उन्होंने कमल नाथ के गढ़ छिंदवाड़ा से उनके बेटे नकुल को करीब सवा लाख वोटों के अंतर से हरा दिया है। सही मायने में मप्र के लिए यही सबसे बड़ी जीत है, क्योंकि 2019 के चुनाव में भाजपा 28 सीटें जीती थी, लेकिन छिंदवाड़ा को हिला नहीं पाई थी।

इंदौर में तीन रिकॉर्ड नोटा को दो लाख वोट

1 भाजपा के शंकर लालवानी को मिले 12 लाख 26 हजार 751 वोट। भाजपा ने यहां पर अपना पिछला रिकॉर्ड तोड़ दिया है। देश में सबसे ज्यादा वोट मिले।

2 सांसद शंकर लालवानी ने देश में सबसे बड़ी जीत हासिल कर ली है। जीत का अंतर 1,00,8077 है। इससे पहले, 2019 में सबसे बड़ी गुजरात की नवसार सीट के नाम पर थी। वहां भाजपा के सीआर पाटिल नवसार सीट से 6.90 लाख वोटों से जीते थे।

3 नोटा को पहली बार देश में 2,18,674 ज्यादा वोट मिल गए हैं। अब तक देश में रिकॉर्ड बिहार की गोपालगंज सीट के नाम पर था। उसे 2019 में देश में सबसे ज्यादा 51,600 वोट मिले थे।

उत्तर ने खड़े किए सवाल, भाजपा को जबरदस्त झटका, सपा और कांग्रेस ने छीनीं आधी सीटें

राम की नगरी अयोध्या में भी भाजपा की हार

उत्तर प्रदेश के लोकसभा चुनावों के परिणामों ने हैरान कर दिया है। एग्जिट पोल के दावों के विपरीत सपा-कांग्रेस के गठबंधन ने जबरदस्त प्रदर्शन करते हुए बीजेपी के अभेद किले में सेंधमारी कर दी है। सपा 37 सीटों के साथ आगे रही। जबकि बीजेपी की झोली में 33 सीटें आई हैं। इसके अलावा कांग्रेस ने 6, आरएलडी ने 2, आजाद हिंद समाज पार्टी (कांशी राम) 1 और अपना दल (सोनेलाल) ने एक सीट पर जीत दर्ज की है।

उपचुनाव : दो भाजपा व दो सपा ने जीतीं,भाजपा को एक सीट का नुकसान

उत्तर प्रदेश में इस बार भारतीय जनता पार्टी की उम्मीदों पर पानी फिर गया। बीजेपी पिछली बार से ज्यादा सीटें जीतने का दावा कर रही थी, लेकिन इस बार लगभग आधी सीटों का नुकसान हो गया। यहां तक कि अयोध्या में ही भाजपा को हार का सामना करना पड़ा है। यूपी की 80 लोकसभा सीटों में वाराणसी से पीएम मोदी, रायबरेली राहुल गांधी, मैनपुरी से डिंपल जीत गए है। नरेंद्र मोदी 1.52 लाख वोट से जीते हैं। उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार अजय राय 4,60,457 वोटों के साथ दूसरे नंबर पर रहे। राहुल गांधी रायबरेली से 3 लाख से ज्यादा वोटों से जीते हैं। लखीमपुर खीरी से सपा उम्मीदवार उत्कर्ष वर्मा, उन्नांव से बीजेपी प्रत्याशी साक्षी महाराज, बुलंदशहर से भाजपा प्रत्याशी डॉ. भोला सिंह, पीलीभीत से जितिन प्रसाद, लखनऊ से बीजेपी प्रत्याशी राजनाथ सिंह, चंदौली से सपा प्रत्याशी बीरेंद्र सिंह, मोहनलालगंज से सपा प्रत्याशी आरके चौधरी, बहराइच से बीजेपी उम्मीदवार आनंद कुमार ने जीत दर्ज की है। वहीं अमेठी से स्मृति ईरानी हरा गई हैं। लखीमपुर खीरी से अजय टेनी भी हार गए हैं। वहीं अयोध्या भी बीजेपी फिसल गई। अयोध्या से लल्लू सिंह हार गए हैं।

अरुण गोविल ने भाजपा को दिलाई जीत

रामानंद सागर की रामायण में राम का किरदार निभाकर पॉपुलरिटी हासिल करने वाले अरुण गोविल मेरठ से चुनाव जीत गए हैं। भाजपा की तरफ से मुकाबले में कूदे अरुण गोविल ने कड़ी टक्कर वाले मुकाबले में सपा की सुनीता वर्मा को हराया है।

भोजपुरी स्टार निरहुआ हारे

उप्र के आजमगढ़ संसदीय क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के धर्मेंद्र यादव ने भोजपुरी अभिनेता व मौजूदा सांसद दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' को 1,61,035 मतों के अंतर से हरा दिया है। निरहुआ भोजपुरी के बड़े फिल्मी सितारे हैं लेकिन सियासी दांव-पेंच में निरहुआ फेल हो गया।

अयोध्या से हारे लल्लू सिंह

उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी को तगड़ा झटका लगा है, वो कई प्रमुख सीटों पर चुनाव हार रही है। उनमें फैजाबाद सीट भी शामिल है। बता दें कि फैजाबाद सीट में ही अयोध्या नगरी आती है, जहां भगवान राम का भव्य राम मंदिर बनने के बाद माना जा रहा था कि ये सीट भाजपा के लिए बहुत आसान है, लेकिन आज आए परिणामों में ये सीट सबसे चौंकाने वाली रही। सपा के अवधेश प्रसाद 55 हजार वोटों से मात दी। उन्होंने कई राउंड में भाजपा के प्रत्याशी लल्लू सिंह को पछाड़ दिया था।

हिमाचल प्रदेश

चारों सीट पर भाजपा का कब्जा, क्वीन कंगना ने राज पुत्र को दी शिकस्त

हिमाचल प्रदेश में भाजपा ने हैट्रिक लगाई है। भाजपा ने हिमाचल की सभी 4 सीटें जीत ली हैं। 2014 और 2019 के इलेक्शन में भी भाजपा ने हिमाचल की सारी सीटें जीती थीं। भाजपा ने इस बार मंडी सीट से एक्ट्रेस कंगना रनौत को कैंडिडेट बनाया था। उन्होंने कांग्रेस उम्मीदवार विक्रमादित्य सिंह को हरा दिया है। इसके अलावा हिमाचल की शिमला, हमीरपुर और कांगड़ा सीट पर भी भाजपा कैंडिडेट ने जीत हासिल की है। मंडी लोकसभा सीट पर भाजपा के टिकट पर चुनाव मैदान में उतरी कंगना रनौत ने कांग्रेस के विक्रमादित्य सिंह को 72 हजार से अधिक वोटों से हराया है। कंगना को यहां 5 लाख से ज्यादा वोट मिले हैं। हमीरपुर संसदीय सीट पर अनुराग ठाकुर ने लगातार 5वीं जीत दर्ज की।

उत्तराखंड

उत्तराखंड में भाजपा ने एक बार फिर किया क्लीन स्वीप, कांग्रेस की हालत खराब

उत्तराखंड में एक बार फिर भारतीय जनता पार्टी ने जीत दर्ज की है। यहां की पांचों सीटों पर बीजेपी ने परचम फहरा दिया है। इस दौरान गढ़वाल सीट पर अनिल बलूनी, टिहरी सीट पर माला राज्य लक्ष्मी शाह, हरिद्वार सीट पर त्रिवेंद्र सिंह रावत, अल्मोड़ा सीट पर अजय टम्टा और नैनीताल सीट पर अजय भट्ट ने जीत दर्ज की है। इसके यहां टिहरी सीट पर निर्दलीय उम्मीदवार बॉबी पंवार ने बीजेपी की टक्कर दी थी, लेकिन वह हार गए. अन्य सीटों पर बीजेपी का सीधे कांग्रेस से मुकाबला था। उत्तराखंड में लोकसभा चुनाव के नतीजे आने के साथ ही भाजपा कार्यकर्ता गदगद नजर आए। प्रदेशभर में कार्यकर्ताओं ने भाजपा मुख्यालयों में ढोल नगाड़ों के साथ जश्न मनाया। एक दूसरे को मिठाई खिलाई।

उत्तराखंड सीएम पुष्कर धामी को बधाई देते पार्टी कार्यकर्ता।

राजस्थान

राजस्थान में कांग्रेस की जोरदार वापसी 8 सीटें जीतकर भाजपा को 14 पर समेटा

राजस्थान की सभी 25 लोकसभा सीटों पर जनता का फैसला सामने आ चुका है। 10 साल बाद कांग्रेस ने जोरदार वापसी करते हुए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को बड़ा झटका दिया। कांग्रेस और इंडिया गठबंधन ने लगातार दो चुनाव में क्लीन स्वीप करने वाली भाजपा को इस बार 14 सीटों पर समेट दिया। एक तरफ बाड़मेर में जहां मोदी सरकार के मंत्री रहे कैलाश चौधरी चुनाव हार गए तो चुरू में राहुल कस्वां का टिकट काटना भारी पड़ गया। यहां तक की भाजपा को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के गृह नगर भरतपुर में भी हार का सामना करना पड़ा। भाजपा के उम्मीदवार और लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला कोटा से, केंद्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल बीकानेर से, गजेंद्र सिंह शेखावत जोधपुर से व भूपेंद्र यादव अलवर से जीत गए हैं। भाजपा ने 14 सीटों पर कब्जा जमाया तो कांग्रेस ने 8 सीटों को अपने हाथ में ले लिया। विपक्षी दलों के गठबंधन 'इंडिया' के घटक दल मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) ने सीकर और राष्ट्रीय लोकतांत्रिक पार्टी (आरएलपी) ने नागौर सीट जीत ली है। इसी तरह बांसवाड़ा सीट पर भारत आदिवासी पार्टी (बीएपी) के राजकुमार रोत विजयी रहे हैं।

राजस्थान कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद दोत्सारा को बधाई देते पार्टी कार्यकर्ता।

हरियाणा

हरियाणा में कांग्रेस और भाजपा को 5-5 सीट

हरियाणा में कांग्रेस पार्टी ने शानदार प्रदर्शन किया है। यहां 10 सीटें थीं, इस लोकसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी और भाजपा ने 5-5 सीटें जीती हैं। हरियाणा के कुरुक्षेत्र में बीजेपी के नवीन जिंदल चुनाव जीत गए हैं। उन्होंने आम आदमी पार्टी के डॉ. सुशील गुप्ता को 29021 वोटों से शिकस्त दी है। हरियाणा की सोनीपत लोकसभासीट पर कांग्रेस के उम्मीदवार सतपाल ब्रह्मचारी ने 21816 वोटों से जीत दर्ज की है। उन्होंने बीजेपी के उम्मीदवार मोहन लाल बाडोली को शिकस्त दी है। हरियाणा की हिसार लोकसभा सीट पर कांग्रेस पार्टी की बड़ी विजय हुई है।

पंजाब

जेल में बंद अमृतपाल को मिली जीत

पंजाब की सभी 13 सीटों पर नतीजे आ चुके हैं। जेल में बंद अमृतपाल सिंह ने लोकसभा चुनाव जीत लिया है। सात सीटों पर कांग्रेस, तीन सीटों पर आम आदमी पार्टी, एक सीट पर अकाली दल और दो सीटों पर निर्दलीय उम्मीदवार ने जीत दर्ज की है. यहां बीजेपी को एक भी सीट नहीं मिली है। 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने दो सीटों पर जीत दर्ज की थी। कांग्रेस को इस चुनाव में 8, अकाली दल को दो और आम आदमी पार्टी को एक सीट मिली थी। पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस उम्मीदवार चरणजीत सिंह चन्नी ने लोकसभा चुनाव 2024 में पंजाब के जालंधर से जीत दर्ज कर ली है।

दिल्ली

दिल्ली में सभी सीटें जीती भाजपा, कांग्रेस-आप साफ

दिल्ली की 7 लोकसभा सीटों पर एक बार फिर 'कमल' खिल रहा है। दिल्ली में आप और कांग्रेस फिर साफ हो गया। कांग्रेस और आप ने मिलकर काफी दम लगाया, लेकिन कुछ खास अंतर होता नजर नहीं आया। दिल्ली में 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने 7 की 7 सीटों पर जीत हासिल की थी। यही वजह है कि इस बार आम आदमी पार्टी और कांग्रेस पार्टी ने मिलकर बीजेपी को चुनौती दी। गठबंधन के तहत आम आदमी पार्टी ने 4 और कांग्रेस ने 3 सीटों पर चुनाव लड़ा। लेकिन, बीजेपी का विजयरथ इस बार भी रोकने में नाकाम रहा। ज्यादातर एग्जिट पोल्स ने दावा किया था कि दिल्ली की सातों सीटें इस बार भी बीजेपी के खाते में जा रही हैं। लेकिन कुछ एग्जिट पोल्स के रुझानों के मुताबिक इंडिया गठबंधन को 1 सीट मिलने की संभावना जताई गई थी। भारतीय जनता पार्टी के मौजूदा सांसदों में से सिर्फ एक मनोज तिवारी फिर से दिल्ली के रण में नजर आए। अन्य 6 सीटों पर उम्मीदवारों को बदल दिया गया था।

कश्मीर में दो पूर्व मुख्यमंत्री उमर-महबूबा को मिली हार

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर से बड़ी खबर सामने आई है। यहां पूर्व सीएम उमर अब्दुल्ला और महबूबा मुफ्ती दोनों ने ही अपनी-अपनी सीट गंवा दी है। कश्मीर के इन दोनों दिग्गजों ने एक्स पर पोस्ट लिखकर हार स्वीकार की है। बता दें कि जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम उमर अब्दुल्ला बारामूला सीट से प्रत्याशी थे। यहां उनके प्रतिद्वंद्वी के तौर पर इंजीनियर राशिद बतौर उम्मीदवार खड़े थे। दोपहर बाद नतीजों का रुख देखते हुए उमर अब्दुल्ला ने बारामूला सीट पर हार स्वीकार कर ली थी। उन्होंने इंजीनियर राशिद को जीत की बधाई भी दे दी। उन्होंने कहा कि इसे स्वीकार करने का समय आ गया है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि हालांकि ऐसा नहीं लगता कि, राशिद की जीत से जेल से उनकी रिहाई में तेजी आएगी।

ढह गया 24 सालों का 'नवीन' किला, ओडिशा में पहली बार भाजपा सरकार

ओडिशा विधानसभा

कुल सीट	बहुमत	भाजपा	बीजेडी	कांग्रेस	अन्य
147	74	78	51	14	04

भगवान जगन्नाथ की भूमि ओडिशा में 24 सालों बाद राजनीतिक इतिहास बदल गया है। ओडिशा विधानसभा में पहली बार बीजेपी की सरकार बन गई है। राज्य की 147 विधानसभा सीटों के लिए हो रही मतगणना के ताजा आंकड़ों के अनुसार राज्य में भारतीय जनता पार्टी ने सरकार बना ली है। वर्ष 2000 से काबिज नवीन पटनायक की सरकार का अंत वर्ष 2024 में हो गया है। ताजा अपडेट के मुताबिक बीजेपी 78 सीटें जीत गई हैं। बीजेपी को उत्तर ओडिशा में बढ़त मिली है। पार्टी ने उत्तर ओडिशा में शानदार प्रदर्शन किया है। बीजेपी को ओडिशा के बारगढ़, कालाहांडी, बालंगीर, पुरी, संभलपुर और क्योंझर में बढ़त मिल गई है।

भाजपा ने फूंका 'शंख'
नवीन-राज का अंत

147 विधानसभा सीट, 78 सीटों पर मिली जीत

अट्टबीरा विस

भाजपा | बीजेडी

निहार रंजन — जीते
स्नेहंगिनी छुरिया — हारे

ब्रजराजनगर

भाजपा | बीजेडी

सुरेश पुजारी — जीते
अलका मोहंती — हारे

कुचिंदा

भाजपा | बीजेडी

राबी नारायण — जीते
राजेंद्र कुमार — हारे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

2024 के ओडिशा विधानसभा चुनावों में बीजद की तरफ से नवीन पटनायक एक बार चुनावी मैदान में थे तो दूसरी तरफ भाजपा ने बिना किसी क्षेत्रीय चेहरे के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता के भरोसे यह चुनाव लड़ा। ओडिशा विधानसभा की 147 सीट और लोकसभा की 21 सीटों के लिए 13 मई से एक जून तक चार चरणों में मतदान हुआ। 2019 के विधानसभा चुनावों में बीजद को 112 सीटें मिली थीं। जबकि भाजपा को 23 सीटें, कांग्रेस को नौ, सीपीआई एम को एक और एक सीट निर्दलीय के खाते में गई थी। इस चुनाव में बीजद को करीब 45 फीसदी वोट मिले थे। जबकि भाजपा को करीब 33 फीसदी वोट मिले थे। कांग्रेस के खाते में 16 फीसदी वोट और अन्य को 6 फीसदी वोट मिले थे।

74 में बहुमत

ओडिशा में सरकार बनाने के लिए बहुमत का आंकड़ा 74 है। 2019 के विधानसभा चुनाव में बीजेडी को 113 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। जबकि 23 सीटें जीतकर बीजेपी मुख्य विपक्षी पार्टी बनी थी।

बीजेडी को 51 सीटें

मतगणना के ताजा रुझान बताते हैं कि 5 मार्च 2000 को पहली बार ओडिशा के सीएम पद की शपथ लेने वाले नवीन पटनायक 24 साल बाद सीएम की कुर्सी गंवा रहे हैं। ताजा रुझानों में बीजेडी को 147 सदस्यों वाली विधानसभा में 51 सीटें मिली है।

कांग्रेस के खाते में 14 सीटें

कांग्रेस को ओडिशा में 14 सीटें मिलती दिख रही है, 4 निर्दलीय उम्मीदवार भी ओडिशा में विजयी हो गए हैं।

चार चरणों में हुआ मतदान

बता दें कि राज्य की 147 सीटों पर चार चरणों में वोट डाले गए थे। इस बार 2.5 करोड़ से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। यहां 74.44 प्रतिशत मतदान हुआ था, जबकि 2019 में 73.09 प्रतिशत मतदान हुआ था।

कभी एनडीए का ही हिस्सा थे पटनायक

बता दें कि नवीन पटनायक कभी एनडीए का ही हिस्सा हुआ करते थे। लेकिन 2009 में उन्होंने एनडीए से राहें जुदा कर ली थी। इसके बाद वे ओडिशा में अपने दम पर सरकार चला रहे थे। लेकिन एनडीए से उनके संबंध हमेशा ही सौहार्द्रपूर्ण और सहज रहे। इस बार चुनाव से पहले एक बार फिर चर्चा चली कि नवीन पटनायक एनडीए के पाले में आ सकते हैं, लेकिन सीट बंटवारे पर बात न बनने की वजह से दोनों पार्टियों की दोस्ती परवान नहीं चढ़ पाई।

उमरकोट

भाजपा | बीजेडी

नित्यानंद गोंड — जीते
नबीना नायक — हारे

बरगढ़

भाजपा | बीजेडी

अश्वनी कुमार — जीते
देबेश आचार्य — हारे

आंध्र प्रदेश

175	कुल सीट
135	टीडीपी
11	वाईएसआर
08	भाजपा
21	अन्य

आंध्र प्रदेश में चंद्र बाबू 'रिटर्न'

आंध्र प्रदेश के लिए मंगलवार का दिन बेहद महत्वपूर्ण रहा। एक ओर सूबे की सत्ता में चंद्रबाबू नायडू 5 साल बाद वापसी कर रहे हैं तो लोकसभा चुनाव में भी टीडीपी ने बड़ा उलटफेर किया है। विधानसभा चुनाव के नतीजों की बात करें तो सूबे की 175 विधानसभा सीटों में से टीडीपी 135 सीटें जीत गई हैं। आंध्र प्रदेश में चुनाव 13 मई को लोकसभा चुनाव के साथ ही हुए थे। मुख्यमंत्री वाईएस जगन मोहन रेड्डी के नेतृत्व में वाईएसआरसीपी ने आंध्र प्रदेश की सभी 175 सीटों पर चुनाव लड़ा था, जबकि एनडीए के तहत टीडीपी ने 144, जनसेना पार्टी 21 सीटों पर और बीजेपी ने 10 सीटों पर विधानसभा चुनाव लड़ा था। अब चुनाव परिणाम सामने आने के बाद ये साफ हो गया है कि चंद्रबाबू नायडू लोकप्रिय नेता बनकर उभरे हैं। आंध्र की जनता ने टीडीपी को विधानसभा और लोकसभा दोनों में अपनाया है।

मोदी-शाह ने दी बधाई

चुनाव के रुझान आने के बाद पीएम मोदी और गृह मंत्री अमित शाह ने टीडीपी चीफ से बात की और उन्हें आंध्र प्रदेश में बेहतरीन प्रदर्शन करने के लिए बधाई भी दी है। चंद्रबाबू नायडू एक बार फिर से आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री बनेंगे। आंध्र प्रदेश में जगनमोहन रेड्डी की वाईआरएस कांग्रेस पार्टी का सूपड़ा साफ हो गया है। विधानसभा चुनाव में पार्टी को महज 11 सीटों पर जीत मिली है। वहीं, लोकसभा की 5 सीटों पर वाईआरएस कांग्रेस पार्टी ने जीत हासिल की।

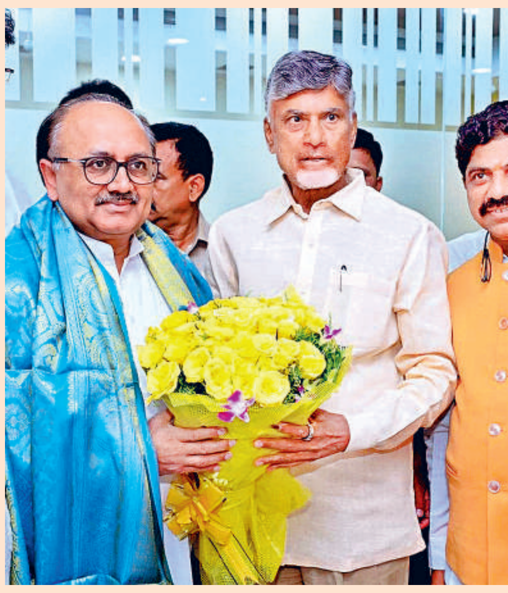

इतिहास फिर से लिखा गया

गुंटूर लोकसभा सीट से तेदेपा प्रत्याशी पी चंद्रशेखर ने संवाददाताओं से कहा, 'इतिहास फिर से लिखा गया है। हम गुंटूर संसदीय क्षेत्र के सभी विधानसभा क्षेत्रों में शानदार बहुमत हासिल कर रहे हैं।' राजग सहयोगियों के बीच सीट बंटवारे के तहत तेदेपा ने 144 विधानसभा सीट और 17 लोकसभा सीट पर, जबकि भाजपा ने छह लोकसभा सीट एवं 10 विधानसभा सीट पर प्रत्याशी उतारे थे।

2019 में लगा था तगड़ा झटका

2014 में चंद्रबाबू नायडू शेष आंध्र प्रदेश राज्य के पहले मुख्यमंत्री के रूप में उभरे और 2019 तक इस पद पर रहे। मुख्यमंत्री के रूप में अपने तीसरे कार्यकाल में उन्होंने अमरावती को दक्षिणी राज्य की राजधानी बनाने का बीड़ा उठाया, लेकिन सत्ता खोने के बाद उनका यह वादा अधूरा रह गया। इसके अलावा वाईएसआरसीपी सरकार द्वारा कौशल विकास निगम घोटाले के तहत 2023 में नायडू की गिरफ्तारी उनके करियर का सबसे बुरा दौर था। पिछले साल 9 सितंबर की सुबह गिरफ्तारी के बाद नायडू ने करीब 2 महीने राजामहेंद्रवरम सेंट्रल जेल में बिताए। हालांकि 31 अक्टूबर को उन्हें अंतरिम जमानत मिल गई थी। अंतरिम जमानत को 20 नवंबर को पूर्ण कर दिया गया था। इसके बाद टीडीपी, भाजपा और जनसेना के एनडीए गठबंधन में शामिल हो गई।

चंद्रबाबू नायडू होंगे मुख्यमंत्री

आंध्र प्रदेश में टीडीपी नेता चंद्रबाबू नायडू ने कहा है कि वह 9 जून को अमरावती में चौथी बार आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेंगे। चंद्रबाबू नायडू के शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी शामिल होंगे।

नायडू का करियर

बता दें कि चंद्रबाबू नायडू 1995 से 2004 तक संयुक्त आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे थे। इसके बाद चंद्रबाबू 2014 में आंध्र के विभाजन के बाद शेष आंध्र प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री भी बने थे। हालांकि 5 साल पहले यानी 2019 के विधानसभा चुनाव में वाईएसआरसीपी ने सूबे की सत्ता हासिल की थी और टीडीपी की अपमानजनक हार हुई थी, लेकिन 5 साल बाद चंद्रबाबू नायडू ने कमबैक किया है।

कौन हैं चंद्रबाबू नायडू?

20 अप्रैल 1950 को आंध्र प्रदेश के अविभाजित चित्तूर जिले के नरवरिपल्ली में जन्मे नारा चंद्रबाबू नायडू ने तिरुपति के श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय में छात्र राजनीति से अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत की थी। इसके बाद नायडू कांग्रेस पार्टी में शामिल हो गए और कैबिनेट मंत्री बन गए। हालांकि बाद में वे अपने दिवंगत ससुर और दिग्गज अभिनेता एन टी रामा राव द्वारा स्थापित टीडीपी में शामिल हो गए। चंद्रबाबू नायडू पहली बार 1995 में मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठे और तीन बार सीएम बने।

हरिभूमि कम्युनिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक अनिल कुमार द्वारा हरिभूमि पब्लिकेशन्स, टिकरापारा, धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001 से मुद्रित एवं हरिभूमि काम्पलेक्स, टिकरापारा, धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक : डॉ. हिमांशु द्विवेदी, स्थानीय संपादक धनंजय वर्मा, संपादक (समन्वय) ब्रह्मवीर सिंह। RNI No. CHHHIN/2002/07457, फोन : 0771-4242222, e-mail:raipur@haribhoomi.com